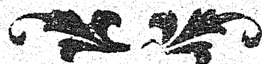
प्रेम प्रदर्शिनी

(हिन्दी साहित्य की अनुपम पुस्तक)





हुब्बलाल वैद्य (लाल) चाहर

प्रेम प्रदर्शिनी

हिन्दी साहित्य एकाडेमी की सेवा में सादर समर्पित

रचियता—

वैद्य हुब्बलाल (लाल) चाहर

ग्राम–रोझौली, पोस्ट बैमन, (आगरा)



[illegible] हुब्बलाल वैद्य रजि० नं. १३१०
ग्राम रोझौली (आगरा)

मूल्य १ रुपया।

प्रकाशक—
मदन मोहन प्रकाशन,
रोभौली, बैंमन (आगरा)

मुद्रक—
दि यूनाइटेड प्रिंटर्स,
चित्रगुप्तगंज, ग्वालियर-१

विषय सूची।



मेरीबात—

प्रिय पाठको आपने बहुत उच्च कोटि के कवियों की बहुत ही नियमबद्ध सरस कवितायें पढ़ी होंगी । उन महान कवि के समक्ष तो मेरी यह तुच्छ कविता कुछ भी नहीं है । मैं कवि तो क्या लेखकों में भी मेरी कोई गणना नहीं है । मुझे तो इष्ट देव श्री श्याम की ही कृपा से कुछ लिखने का साहस हुआ है । मेरे मन का भाषा प्रेम देश प्रेम मुझे काव्य कथने को विवश करता है। भाव उत्पन्न होते हैं । मैंने यह पुस्तक ससंकित प्रकाशित कराई है । कहीं मेरा मानव समाज में उपहास न हो। इस पुस्तक प्रकाशन में पं॰ शंकरलाल शर्मा गौड़ निवासी द्वारा ने बहुत ही सहयोग दिया है तथा असमीर व कल्यान सिंह ने प्रतिलिपि करवाने में बहुत ही सहयोग दिया है । मैं इनका बहुत ही आभारी हूँ । मैं अपने प्रयत्न को तब ही सफल समझूँगा जब कि इस पुस्तक को पाठकगण सहर्ष अपनायेंगे और मेरी त्रुटियों को क्षमा करते हुये मेरे भावों की ओर देखेंगे ।

आपका शुभाकांक्षी

हुब्बलाल कवि (लाल) चाहर

—: समर्पण :—

नील सरोरुह सरिस शुभ, सकल कलानिधि श्याम ।
तब हित नित २ 'लाल' की, कोटि कोटि परनाम ।।

मेरे पूज्यनीय परम प्रिय इष्ट देव श्याम सप्रेम प्रणाम ।
आप की असीम अनुकंपा स मैंने इस विशाल कविता कल्लोलिनी में निज मद मति नौका द्वारा विहार करने का प्रथम प्रयत्न किया है । भाषारूपी नौरसयुक्त जल का प्रबल प्रवाह व मन भावन की लोल लहरों का शीतोष्ण आनन्द लिया है बहुत कुछ देखने पर भी अंत नहीं पाया । मैंने उस दृष्य का वर्णन करना प्रारंभ किया तो मैं मंद मति वाला छोटे बच्चे की तरह यथार्थ ढंग से कहने व समझाने में असमर्थ रहा लेकिन मैंने संकोच तनिक भी नहीं किया अपने दृढ निश्चय पर आपकी कुछ पवित्र लीलाओं का वर्णन किया है । आप की गुण गाथा रचकर आपको समर्पित करके मैंने तो अपना काम पूरा ही किया । चाहे जनसमुदाय को पसंद हो या न हो आपके कोटानिकोटि सेवक हैं उनमें मैं ही एक मंद मति का हूँ । आप मेरी त्रुटियों पर क्रुद्ध न होकर प्रसन्न होंगे और इस पुस्तक को ग्रहण करने की कृपा करेंगे ।

आपका

शुभाशुभ (लाल) चाहर

ॐ



—रचियता

मान चि॰ कवि लाल नाहर

मेरी कामना

दो॰— जय जय जय हे अमित प्रिय, पावन भारत देश।
तव यश यहि संसार में, गुंजित रहे हमेश॥

छं॰— सरस २ तरु रहैं सदां तव, मेरे मंजुल भारत बन।
फल फूलन सों सज्जित डारन, कलरव करें विहंगन गन॥
तव गुन गौरव दश दिशि गाजै, सुनि २ ललचै हर इक जन।
उद्यत रहैं सदां तव रक्षक, करन निछावर तन मन धन॥

छं॰— सैन शक्ति सों युक्त रहे अरु, शूर साहसी सेनानी।
समर सकाय नहीं कालहु सौं, युद्ध कला को गुरु ज्ञानी॥
लोभ लालसा मन नहिं निदसै, नीति निपुण दानिन दानी।
लाल, लखै अस नर नाहर की, विजय करति नित अगवानी॥

छं॰— फूलैं फलैं विटप तृण बल्लरि, जिन सौं वसुधा सुंदर साजै।
मोद मनावैं नर नारी नित, सुख शान्ति की बीणां बाजै॥
भोजन भवन सुवसनन की छवि, लखि२ के अलका पति लाजै।
हे हरि मम प्रिय भारत बन में, सदां बसंत बहार बिराजै॥

छं॰ - जनर पूजन करे आरती, रामायण अरु गीता की।
गाथा गुंजै नित श्रुवनन में, राम श्याम शुचि सीता की॥
नित ही नीर बहावैं धारा, सरजू जमुनां गंगा की।
सदां स्वदेश विदेशन में प्रिय, लहरैं लहर तिरंगा की॥

दो०— सुमिरि सुधा सम सुखद शुचि, शिक्षक मदन गुपाल ।
भावन भावन सौं भरो, भाषा भाषत 'लाल' ॥
नील सरोरुह सरिस शुभ, सकलकला निधि श्याम ।
तव हित नित २ लाल कौ, कोटि २ परनाम ॥
ध्यान धरौं नंद नंदन कौ, जब उर उठैं उमंग ।
तब ही मम मन आँकुरैं, कविता कौ कल रंग ॥

छं०— जग जन्यौं न काहू जननी ने, अबलौं अस नर नागर है ।
नीति निपुण सब कला कुशल शुभ, ब्रज बन को जस बाघर है ॥
जाकौ लोक अलोकन में गुन, गौरव अमित उजागर है ।
मेरी रसना रटि तू निशि दिन, श्याम नाम सुख सागर है ॥

छं०— सूर शशी नित हरि हित तड़पत, कहा कहै कवि उड़गरा की ।
सलिल समीर विरह सौं सूखे, गई कौमुदी करण करण की ॥
जीव जन्तु अनल महि अंबर, तरु २ पल्लव पल्लव की ।
यही कामना बृज बन में पुनि, वेनु बजै वृजवल्लभ की ॥

दो०— करौ कृपा करि तुरत तुम, वाँणी बुद्धि विशाल ।
जवही जन मन मोहनी, काव्य कथै कवि 'लाल' ॥
भाषा भाव प्रसार हित, मम मन अमित उताल ।
जिनकौं अंकित करन कर, गही लेखनी 'लाल' ॥

पुस्तक महिमा

दो०— पुस्तक प्रेम प्रदर्शनी, रची रुचिर ही ढंग ।
यहि के पढ़ै सुपाठ सों, रंगै राग के रंग ॥

छं०— प्रेम प्रदर्शनी पुस्तिका नित, पढ़ौ प्रेम सों नर नारी ।
शोक सिंधु कौं सहसा शोषति, अति ही यह मंगलकारी ।
सुपथ-प्रदर्शन करति प्रेम कौ, मन नव भाव भरति भारी ।
शांति सुधा निधि मिलत तुरत ही, व्याधिन की काटति झारी ॥

पुस्तक समर्पण

छं०— हे हरि तव यश सौं पूरित यह, पुस्तक परम निराली है ।

यहि अंतर की कल गाथा प्रिय, प्रेम मधुर रस शाली है ।।
पृष्ट २ पै राजि रही शुभ, भावन की हरियाली है।
बहु कल सी काव्य कौमुदी की, पंक्ति २ उजियाली है ।।
छं०— प्रेम प्रदर्शिनी पुस्तिका शुभ, सुरभित सुमनन की बारी।
यहि की महंक मिलत मन मधुकर, चितवत लालायत भारी ।।
सुंदर शुचि सरस सुगंधित सी, ज्यौं की त्यौं नव निर्मित है।
हे श्याम तुम्हारी यह थाती, सादर तुम्हैं समर्पित है ।।



अध्याय १

❀ श्री राधा अरु कृष्ण की छबि तथा स्तुति ❀

दो०— जय जय जय हे जगत गुरु, गुन गर्भित गोबिंद।
तुमरी महिमा किमि कहों वृज सर के अरविंद ।।
मेरी मति लघु मंद प्रभु, तव यश सिंधु अपार।
जाकौ तट पावत नहीं, करौं कोटि उपचार ।।
कारज संभव करत सब, निज २ बल अनुसार।
लखी सुनी नहि सिंधु कौं, कीड़ी करि गइ पार ।।
मम मानस मानत नहीं, हट ठानत हर याम।
कहत कान्ह की कीर्ति कथि, जनि सोचे परिणाम ।।
कहौ कान्ह हौं किमि करौं, मम मन भरत उमंग।
बरजत बहु मानत नहीं, रँग्यौ रावरे रंग ।।
छं०— मन नहि मानत हौं किमि मानौं, सुनि मेरी लघु मंद मती।
तजि तू तुरत कुबानि बावरी, मम मानस की रौन रती ।।
तब बिन नैंक नहीं मन जानत, अनिल अनल नभ जल जगती।
गोविंद के कल गुन गावन हित, चलि २ री अब शीघ्र सती ।।
दो०— काव्य कलित कल्लोलिनी, बहती विपुल लहराय।

यहि में बिहरत कुशल कवि, मति की नाव बनाय ।।

छं०— कबिता तटी उष्ण अरु सीतल, स्वच्छ सुधा सम हिय हारी :
नौ रस युक्त नीर भाषा कौ, बहत सदां यहि सुख कारी ।।
लोल लहर लहरैं भावन की, जिन की द्युतिदीपित न्यारी ।
वुद्धि विनोद करति यहि अंतर, याहि लखौ सब नर नारी ।।

दो०— जन जन नायक जगत पति, जपौं निरंतर तोय ।
बिघन विदारौ दास के, अमित आस प्रभु मोय ।।
प्रेम पूरि पुनि पुलकि बहु, बिनय करौं कर जोर ।
मेरे मन मंदिर बसौ, नागर नंद किशोर ।।
अधर अरुण अति श्याम के, भावन भृकुटी भाल ।
स्रवन नासिका कंठ कल, लोचन लोल विशाल ।।

छं०— जय जय जय तव नव नट नागर, नीति निपुण जग निर्माता ।
तव दरसन हित तड़पत नित ही, नाश्यौ नहीं नेह नौंता ।।
जननी जनक तत्व यहि तन के. तुम मम मन भावन भ्राता ।
बिपुल बिकल हौं भव व्याधिन सौं, त्राहि२ हे सत त्राता ।।

दो०— कानन कुंडल कान्ह के, नव कल क्रीट कपाल ।
मुख मुरली कटि पीत पट, मुक्तन की गल माल ।।
भूषित भूषण बसन हरि, तन द्युति दमकी दून ।
श्याम शिला विकसे मनो, कोटिन कनक प्रसून ।।
सुघड़ सलोने श्याम की, अस मंजुल मुस्कान ।
निरखि निशाकर गगन में, तजत तुरत निज मान ।।

छं०— कानन कुंडल कटि पीताम्बर, नव कल क्रीट कपाल लसै ।
मोतिन की गल मंजुल माला, मनो मनोहर हास्य हँसै ।।
अधर धरी जब बाजति वंशी, सब तन ताको तान कसै ।
सुघड़ श्याम के श्यामल तन में, छवि नित२ ही नव निवसै ।।

दो०— कांधे धरो सुकामरी, मुकट मनोहर भाल ।
कोमल कर लकुटी लहौ, बसौ सदां उर 'लाल' ।।

सुमिरौं हौं सत भाव सौं, निशि दिन नंदकिशोर।
नैंक निहारौ करि कृपा, दीन दास की ओर॥
सुयश सुनत ही रावरो, ललचत निशि दिन 'लाल'।
दरस दास कौं किमि मिलैं, हे गिरधर गोपाल॥
मम माता भ्राता तुम्हीं परम पिता सुख धाम।
स्वामि सखा सुज्ञान निधि, सबल सहायक श्याम॥

छं०— अजय अजर प्रभु अगम अगोचर, कण२ में तव रूपक राजै।
अगनित अनुपम रूप रावरे, तन विन बहु विधि सौं शुभ साजै॥
चरनन बिन चंचल गति चालत, करत करन बिन कोटिन काजै।
लोचन लखत सुनत स्रवनन सों, जग जग तव गुन गौरव गाजै॥

दो०— दीन बन्धु दुख दूरि करि, चैंन नहीं छिन मोय।
राग द्वेष के रंग रंगि, भूलि गयौ प्रभु तोय॥
दीन बन्धु मो दीन के, श्याम सुधारौ काज।
अगनित अबगुन गनो नहिं, अब मेरे बृजराज॥

दो०— हैं अखिलेश्वर रावरौ, चरित न जानत कोय।
अस दूसर जनम्यौ नहीं, जगत जनावत जोय॥

छं०— वेद बखानत गुन गौरव तब, तेज पुंज अज अविनासी।
जीव जन्तु जल अवनी अंबर, अनिल अनल अंतर बासी॥
नीति निपुण निर्दोष सदा नव, सबल सुहाबन सुख रासी।
'लाल' लखै किमि रूप रावरौ, निज मनको मंजुल काशी॥

दो०— श्याम सरिस दूसर नहीं, जाऊँ जाके पास।
सुख सागर कों त्यागि किमि, करौं कूप की आस॥
मन मोहन के दरस हित, तड़पत बहु मन मोर।
सो सुकाल कब निरखि हौं, नैंनन नंद किशोर॥
नम्र निवेदन नित करौं, शीघ्र सुनों सुख धाम।
ब्याधि विनाशौ सकल तुम, मेरी राधे श्याम॥
नव नलिनी सी राधिका, मधुप सरिस शुभ श्याम।
जोहत यहि जोड़ी जुगल लाजत कोटिन काम॥

विनय यही वर राधिका, काटौ कठिन कलेश ।
बसौ सुलोचन 'लाल' के, राधे श्याम हमेश ॥
अरुन नील नग निकट में, जिमि राजत हैं दोय ।
अस ही राधेश्याम तन, कान्ति दिखावत मोय ॥

छं०— तड़पत भव बारिधि धार परयौ, कोहू नाहैं निकट किनारो ।
मोह मच्छ अरु माया मगरिनि, निशि दिन नौंचति गात हमारौ ॥
विषधर सम विष बमन करत नित, यह दुर लोभ भयानक भारौ ।
त्राहि २ अब 'लाल' पुकारत, तुमरौ ही कछु श्याम सहारौ ॥

छं०— जीव जन्तु मन मोहित माया, सब जग जानैं नाच नचायौ ।
मेरे तेरे मध्य महा प्रभु, इक अलख आवरन छायो ॥
मम मन तड़पत तव स्मृति में, नित २ नव २ नेह बढ़ायौ ।
खोजत बिचरत बीहड़ बारी. पै कहुँ तेरौ पतौ न पायौ ॥

दो०— मेरे मानस मांझ बहु, हरि दरसन की आस ।
बुझति नहीं बृजराज बिन, इन नैंनन की प्यास ॥
इन नैंनन निरखे नहीं, कबहूं नंदकिशोर ।
मंजन मम मन मूढ़ करि, चलि मथुरा की अ र ॥
लोचन ललचत दिवस निशि निरखे नहिं चित चोर ।
आस अभागिनि किमि करौं, जाउं बता किस ओर ॥

छं०— नित निवसत जहँ हे मन मोहन, तब कहाँ सौ सुघड़ सदन ।
पूछि रह्यौ हौं पुनि २ रो रो नहिं जनावत साधु सुजन ॥
बिरह रावरी में मन मेरौ, निशि दिन तड़पत विपुल बिकल ।
इन नैंनन की निंद्रा नाशी, निरखत हैं जे छिन २ पल ॥

छं०— सूर शशी अरु अगणित उड़गण, सब दीपित तव तेज सौं ।
नित्य नियम संचार करत शुभ, सुख रासी सुख सेज सौं ॥
जनन जनावति रूप रावरो, उदय अस्त रवि की लाली ।
यहि लखि कहत कूकि मनु कोकिल, व्योम विराजत वनमाली ॥

दो०— स्रवनन सौं ही सुनत नित, नहीं निहारे नैंन ।
करि २ सुधि शुभ श्याम की, तड़पत हौं दिन रैंन ।

तामस सौं जप तप नहीं कर न करयो शुभ काम ।
सहसा सुनि रे मूड़ मन, काहि मिले घनश्याम ।।
गुरु पद पंकज पूजि के, गहि रे ज्ञान गंभीर ।
कत जन तू प्यासौ फिरत, सुख सागर के तीर ।।
अलि ललचत जिमि जलज हित, घन हित ललचत मोर ।
अस ही हौं ललचत फिरत, हेरन नंद किशोर ।।
महँक मिलत अरविंद की, अलि धावत ता ओर ।
अस ही यश सुनि श्याम को, चंचल चितवहु मोर ।।

छं०— रूठि रहे कत परम मित्र मे, उद्यत तुम्हें मनाने को ।
अश्रु बिंदुओं की कल माला, भावन भेंट चढ़ाने को ।।
सुरति रावरी में मुरझायौ, मेरे मन को मजुल बन ।
कामनान की कल कोयलिया, कत न तजे अब आपन तन ।।

दो०— जग के झूठे गीत तू, गावति आठौ याम ।
मेरी रसना बावरी कत न कहँति हरि नाम ।।
राधेश्याम बिसारि के, बनी बिनासिनि नींच ।
जीबन बिरवा जीभ कत, रही हलाहल सींच ।।
रसना राधेश्याम को, रटि अब सुंदर नाम ।
अंत समय यह आइगी, थाती तेरे काम ।।

छं०— दीन दुखी लखि द्रवे नहीं सो, कुलिशहु सौं वहु बढ़ कुटिल हियौ है ।
जाकों शठ के सम हा समझौं, सत संगति सौं नहिं लाभ लियौ है ।।
जो जन अधम अमित अभिमानी, सुप्रेम को नहिं पीयूष पियौ है ।
जन जनम बृथा हीं जा जग में, कर नींक न कोऊ काम कियौ है ।।

छं०— तिय तटिनी की रूप धार में, बहँत बिलोकत मानस मन ।
चले जात वहु चंचल गति जे, करत२ प्रिय अभिनंदन ।।
प्रेम पूरि पुनि पुलकि २ के, बूढ़े सब ही गन के गन ।
हौं हूं बूढ़त बहत धार यहि, त्राहि २ अब हे भगवन ।।

छं०— ग्रीष्म की गरमिन में मोहन, नीर माँझ निज नगर बसायौ ।
पुनि पावस की पवन मिल्यौ अरु, घन में तू घनश्याम समायौ ।।

शरद शशी की कल किरनिन में, जन नायक निज रूप दिखायौ।
शिशिर ऋतु अरु हेमंत में, रवि पावक तव तेज समायौ ॥
बसि बसँत के कल कुसुमन में, नंद नंदन निज रूप जनायौ ॥

दो०— मेरौ २ कहत ही, बीति गयौ बहु काल।
पै पायौ नहिं एक निज, हेरत हारयौ 'लाल' ॥
मंजन करि मन मुकर कौ, मानव महा मलीन।
रुचिर रूप ससार कौ, पुनि तू निरखि नबीन ॥

पद— मेरी विनय सुनौं शुभ श्याम।
नित २ की नव २ पीरन सौं, करत फिरत कुहराम ॥
बिपुल विकल अब निशा दिवस मन, मिलत नहीं आराम ॥
तुम तजि काकी आस करौं प्रभु, करु मम पूरन काम।
ब्यधि बिनाशौ शीघ्र 'लाल' की, हे करुणा के धाम ॥

छं०— मोहन भजि मन मानस मूरख, नित्य नहीं तव कल सी काया।
यहिं कौं तेल फुलेलन सींचत, नित २ लखि २ के ललचाया ॥
तन धन धाम देश बन बारी, तव सब इक दिन होय पराया।

पद— मम मन भजि अब राधे श्याम।
भव बारिधि के भँवर जाल में, बिचरयौ आठौ याम ॥
कृष्ण कृपा बिन अबलौं तेरे, सब ही काम निकाम।
जिन जनि जो है बन उपबन में, व्यापक सब ही ठाम ॥
प्रेम पगत ही तोकौं मिलि हैं, सुन्दर सुखद सुधाम।
तब तू पुनि २ पुलकि २ बहु, लखियो रूप ललाम ॥

पद— दिखाबहु आपन गोकुल गाम।
मम मानस नित २ ही ललचत, सुनि २ जाको नाम ॥
कैसे सर सरिता बन बारी, कैसे सदन ललाम।
बिनह करौं बहु बार राबरी, सुनौं सुहावन श्याम ॥
'लाल' लगी नित लखन लालसा, हे करुणा के धाम।

दो०— अवनी अम्बर अनिल त्रिय, अरु जुग पावक नीर ॥
जिन सुपंच तत्वन सौं, विधि यह रच्यो शरीर।

कर रसना पद लिंग गुद, नैंन नासिका कान ।
आनन त्वचा इन्द्रिय दश, करते वेद बखान ॥
दश इन्द्रिन स्थूल कौं भाषत वेद शरीर ।
सो मन के आधीन है, सहँत सुक्ख अरु पीर ॥
तन अरु जीव संयोग ही, जीवन मंगल मूल ।
जिन को मन मंत्री बन्यौं, चलत सदा प्रति कूल ॥
प्रिय बस्तु के मिलन हित, किंवा बिछुरन काल ।
तब तड़पत यह अमित हो, मानस मजु मराल ॥
अजर अमर शुभ जीव यह, जरत कटत नहिं पीर ।
बंदी बनि के बसत है, सुबंदी गृह शरीर ॥
मानस कैसो बिषय धन, जानि जीव को मोय ।
याही के परताप सौं, मुक्त पावत कोय ॥
बंदी गृह बंदीन को, परत नही जस चैंन ।
असही तन बसि जीवहू, तड़पत बहु दिन रैंन ॥
सरल भाव को जीव पै, मंत्री चपल चटोर ।
एक पंथ पकरत नहीं, बिचरत यह चहुं ओर ॥
यह मानस मानत नहीं, चलत चपल बिपरीत ।
शुभ चितक सौं शत्रुता, अहितन सौं नित प्रीत ।
दो०— मन मन्त्री मानत नहीं, बिचरत बाट अनेक ।
अवत रूप रँग रीझिकें, बिसरत सकल बिबेक ॥
उर सौं उत्पति राग की, उर ही यहि कौ वास ।
उर कुंजन क्रीड़ा करत, सब तन अमित प्रकाश ॥
उर बीथिन बिन अंग की बिचरत जब अनु राग ।
यहि सौं उनमें तपन अस, निकट बसी मनुआग ॥
जब जा मानस माँझ में, प्रेम करत संचार ।
तब बहि की दुर दाह कौं, यह ही जानन हार ॥
मानस अरु यहि प्रेम को, रहँत सदा शुभ रंग ।
युग २ लौं जिन युगन को, बिछुरत नाहि संग ॥

अलग करन मन प्रेम कौं, कोऊ चाहत होय।
अस अनहोंनी बात कौं, करि नहिं पायो कोय॥
जा मानस के मांझ में, बसत नहीं अनुराग।
बिनय कहा ता कुलिश पै, पावक करत न दाग॥
मन मिलते ही बढत बहु, मन फाटत घटिजाय।
अहे प्रेम परतंत्र तू, घट २ रह्यो समाय॥
जब जा मन के माझ में, बसत परायौ रंग।
तब सौं यहि में राग की, उतरति चढ़ति तरंग॥

दो०— अंकुर अंकुरा राग के, जब जा मानस बीच॥
तब तड़पत हर याम यह, बिबिधि भांति सौं नीच।
जा जग बन बिकसे बिपुल, पावन प्रेम प्रसून॥
जिनके मधु हित मन मधुप, तड़पत है दिन दून।
पावन प्रेम प्रसून को, छाई बिपुल बहार॥
यहि को कलित सुगन्धि सौं, सुरभित सब संसार।
बन बिरवा नहिं प्रेम के, मिलत नहीं बहु मोल॥
मन की कलित तरग यह, मन सह करति कलोल।
पावन प्रेम प्रसून की, बाट बृहद बिकराल॥
पावत प्रेमी प्रेमिका, सह सह संकट जाल।

छं०— नहिं निरख्यौ कहुँ पेड़ प्रेम को, मैं बिहरयौ बहु बागन बारी॥
सागर सरित न अचल न कूप, न तीर त्रशूल कृपाण कटारी।
महि मंडल के खण्ड २ सब जो है जग के महल अटारी॥
बृहद बजारन मोल मिल्यौ नहिं, याकी मूरति नैन निहारी।

छं०— या जगती के खण्ड खण्ड में, बहु बिचरयौ हौं नेह निहारन॥
सरिता सर बन उपबन बारी, लता पता तरु २ की डारन।
सलिल समीर सूर शशि उडगण, पय पवि पावक पुंज पहारन॥
करि अन्वेषण 'लाल' लख्यौ यह, निज मन के ही बृहद बजारन।

दो०— प्रेम पुष्प पावन मधुर, सब सारन को सार॥
यहि को करत प्रयाग सो, भव सागर सों पार।

कमन कामना मन मधुप, पीवन प्रेम पराग ॥
पै यहि चाखत चतुर ही, करि करि सत अनुराग ।
अलि अस परम पराग पी, सह सह के नित पीर ॥
अमित अपावन रावरो, सुरभित होय शरीर ।
सुधा सिन्धु सहसा मिलै, रोगिन अँग आनन्द ॥
पै मधुकर यह यतन बिन, मिलै नहीं मकरन्द ।
अलि चढ़ि कें चखि ऊपरै, विकसे सुन्दर फूल ॥
कत तड़पत तू बावरे, लिपिटि लता की मूल ।

छं०— प्रेम पयोधि अमित ही पावन, पै अन्तर अनल जरति भारी ॥
जाको जोहत दृष्य सुहावन, नित जरत जगत के नर नारी ।
जीव जन्तु सब ही के मानस, मझ जाकी चिपटी चिनगारी ॥
'लाल' कथत किमि पार करौं यहि, गुन गर्भित हे गिरधारी ।

अध्याय २

प्रेम--परिचय

छं०— रूप रंग पै मोहत ही मन, अंकुर अंकुरत राग के ।
जब सों जे अस अंग जरावत, अंगारे जस आग के ॥
व्याकुल बिचरत बीहड़ बारो, प्यासे प्रेम पराग के ।
दश दिशिन चितवत चकित अस जस, खेलन हारे फाग के ॥

दो०— पावन प्रेम पयोधि को, कबहु न आवत अंत ॥
बूढ़त बहत यहि धारहि, सबही संत असंत ।
जीव जंतु के गलन में, परी प्रेम की पास ।
सब व्याकुल यहि व्याधि सों, लहें न सुख की स्वांस ॥
रूप रंग कों निरखि कें, उर अति अंकुरत राग ।
जबही जाके मध्य में, परत प्रेम को दाग ॥
प्रेम दाग दाहत सदाँ, दारुण जाकी पीर ।
मिटत न जोलौं बेदना, धुवत न प्रेम सुनीरः ॥

प्रेम दाग दुख सों सन्यो, जासों सुखी न कोय ।
देखि अली अस दाग करि, जब सब परिचय होय ।।
तूतौ जानत अस अली, प्रेम सुमगंल मूल ।
पै यहि पथ पग परत ही, सहँत सहस्त्रों शूल ।।

छं०— प्रेम प्रलाप करत सब प्राणी, भरिकें अमित उमंगन में ।
कुटिल कामना जोंही जिनकी, रंजित फीके रंगन में ।।
जीव जन्तु स्वारथ सिद्धी यह, नीच समायो अंगन में ।
हेरि २ हों हारि गयो जब, पायो प्रेम पतंगन में ।।

छं०— प्रेम पूरि सुपतंगन के गन, दीप लोय जरते जोहे ।
जरि २ कें जे पुनि २ लिपिटत, रूप मुग्ध मरते जोहे ।।
मरते २ निज प्रेयसि को, अभिनन्दन करते जोहे ।
जिन के जिय अस लगन लगी सो, भव वारिधि तरते जोहे ।।

दो०— लोय लिपिटि तन जरत तब, बढ़त अमित अनुराग ।।
छक्यो पतंग न अन्त तक, पीवत प्रेम पराग ।
प्रिय पतंग तड़पत चली, तेरी अन्तिम स्वास ।
तन जरयो पै जरी नहीं, परम प्रेम की पाश ।।

छं०— सुनों सकल सुप्रेम पथ गामी, चकित कियो हों पतित पतंगन ।
प्रेम पूरि कल कूँजि २ के, कीयो जिन सत प्रेम प्रदर्शन ।।
दीप सिखा सह लिपिटि २ निशि, छिनक पलक जिन निज जारयो तन
बृत्त बिकाल बिलोकत ही अस, बहु विकल भयो जब मेरो मन ।।

छं०— प्रेम पूरि उड़ि चली चकोरिनि, सुन्दर शशि जब व्योम बिलोका ।
यहि मानस माँझ उमंग उठीं, पलक छिनक सब नाश्यो शोका ।।
राग रंग अस रंगी रंगीली, झूमि झूमि झुकि खावति झोका ।
कल २ कूँजि कलोल करति यह, लखि २ कुहराम करत कोका ।।

छं०— बीन बज्यो शुभ सुनि स्रवनन सों, निज मन मोद कुरंग करै ।
झूमि २ झुकि झपि २ कें बहु, कुललि २ कल्लोल करै ।।
मदमातो सो नियरें आवत, बादक सों नहिं नेंक डरै ।
घाम घाय निज तुरत अयाने, कस तू बिन ही मृत्यु मरै ।।

पद — दसहु दिशि प्रेम पयोधि बहै।
पीवत परम नीर नहिं यहि कौ, कत नर अलग रहै ॥
यह तव मानस मांझहु निवसत, तब हूँ द्वेष दहै।
सब सौं हिल मिल चलि तू जबही, जीवन लाभ लहै ॥
राग रंग रँगि मानस मूरख, पुनि पुनि 'लाल' कहै।

पद— प्रेम कौ छाय रह्यौ जग जाल ॥
कोऊ बंचित नहिं जग जासौं, जोगी जती भुआल।
यहि के माँझ जीव सब उरझे, फिरत बिकल बेहाल ॥
जासौं सुरझत नहिं काऊ कौ, कबहूं हृदय मराल।
राग रंग रंजित बहु, तड़पत निशा दिवस कवि 'लाल' ॥

पद— प्रेम की अति ही दारुण पीर।
यह जाके मन अंकुरत जब सों, निशिदिन रहत अधीर ॥
भूषण बसन न ताकौं भावत, तनिक न भोजन नीर।
छिन पल परत चैन नहिं चित कों, सालत सकल शरीर ॥
प्रेयसि प्रियतम निवसत नित ही, दुःख सागर के तीर।

अध्याय ३

गोकुल गाम का दृष्य

दो०— हे गोकुल गोपाल के, तीरथ तुही महान।
यहि जग पुर पावन नहीं, दूसर तोर समान ॥
गोकुल में क्रीड़ा करत, नित २ ही शुभ श्याम।
मुदित होहिं नर नारियाँ, निरखि श्याम सुख धाम ॥

छं०— कालिंदि कूल बस्यौ पुर गोकुल, सब बिधि सोंसो सुखकारी।
सदन सुहावन सित २ से नव, दशदिशि जिनके फुलवारी।
बागन विटप रसालन के बहु, केशरि की सुरभित क्यारी।
नृत्यत मोर चकोरन के गन, कलरव करत कूकि भारी ॥
गौर वरण बहु रुचिर रूप के, नीति निपुण बहु नरनारी।
अस शुचि पुर की वर बीथिन में, प्रमुदित बिचरत गिरधारी।

छं०— गाय गईं गौशालन सों जिन, दुरगम बन की बाट गही है।
शीघ्र सिधारौ संग माम के, गोविन्द सों अस ग्वाल कही है॥
अब तक अर्धहि पान करी जिन, झट पट धरणी धरी दही है।
सजे श्याम शुभ तन पट पहिरे, इक कर लकुटी लपकि लही है।

छं०— नव नीत सिता शुभ सानि धरे, तिन तजि तुम कत श्याम सिधारे।
हम तब संग चले सुख राशी, बार बार बलराम पुकारे॥
सुनि शुभ बानी बर भ्राता की, फिरि फिरि कें नदलाल निहारे।
'लाल' कथत तुम सह जनि आओ, पग पूजौं हों तात तिहारे॥

छं०— धरि काँधे कामरि कारी सी, कोमल कर लकुटी लहिकैं।
लखि आलीं कानन कान्ह चले, गायन सह ग्वालन गहिकैं॥
मन वावन हित ही मान करियौ, सो मम मान गयौ वहिकैं।
निकट नही शुचि श्याम सुघड़ बहु, सुरति सतावति रहि रहिकैं॥
'लाल' करति कुहराम कामिनी, कान्हाँ कान्हाँ कहि कहिकैं।

छं०— श्याम शरीर पीत पट पहरे, गल मुक्तन की माला डारी॥
शीश क्रीट कल कुण्डल कानन दोउनकी द्युति दीपित न्यारी।
कोमल कर कल बेनु विराजति, इक कांधे धरि कामरि कारी॥
लोचन लोल 'लाल' मम भावन, अलि लखि वे ब्रन जांत विहारी।

छं०— ग्वाल बाल सह गोकुल के बन, धेंनु चरावत गिरिधारी।
कालिंदी कूल कलोल करत नित, बिहरत बहु बागन बारी॥
बेनु बजावत बंशी बट पै, सब जीवन मंगल कारी।
रुचिर रूप लखि 'लाल' श्याम को, मुदित होंहि नित नर नारी॥

छं०— गोरस की गोरी गोरी के, शिर सोहै सुन्दर गगरी।
हिय हरषि चली हरि हेरन हित, गहि कैं इक डाबर डगरी॥
दधि बेचन मिस बहु बिहरि रही, बीथिन में गोकुल नगरी।
'लाल' लख्यो नहि नन्द तनय जब, सोचन सों सूखी सिगरी॥

छं०— नभ नाशी दमक दिबाकर की, जब निज नगर चलीं नारी।
बाटहु में बाट विहारी की, हेरत हेरत यह हारी॥
शोक सिन्धु सो उमहि रह्यो हिय, सुधि बुधि भूली सुकुमारी।

साहस स्वाँस स्वाँस पै छीजे, 'लाल' लखे बिन गिरिधारी ॥

छं०— तब शीश धरी शुभ माखन की, जन मन मोहि रही मटकी ।
सजि श्याम मिलन हित जाय सखी, जानति हों तव मन घटकी ॥
भावन भूषण तन पट पावन, नासा नथ लहरति लटकी ।
सुघड़ श्याम को नाम सुनत तब, चट चट चट चोली चटकी ॥

छं० — अलि अति ही अंग उमंग उठीं, जब जोहे शुभ श्याम शशी ।
विद्युत सम संचार करति चित, मंजुल मादक मन्द हसी ॥
मोहन की मृदु मोहनि मूरति, मेरे यहि मन माँझ बसी ।
जीवों हों न जतन सों सुन्दरि, श्याम बरण के व्याल डसी ॥

छं०— लघु २ बिन्दुन बारिद बरषत, पपिहा पुनि पुनि पीय पुकारत ।
केकी कल कल कूकि २ मनु, सरस २ शुभ राग उचारत ॥
पवन सुहावन शीतल शीतल, दशहु दिशन सों रुकि २ आवत ।
सो पुनि २ मम तन कों परसत, सोवत हूँ सखि काम जगावत ॥

छं०— सर सरितन में अम्बुज बिरवा, हरित २ ही सकल सुहावत ।
जिन पै अगनित पहुप प्रफुल्लित, सो शुचि सुखद सुगंधि लुटावत ॥
महकन मोहे मधुपन के गन, गूंजि २ मृदु राग सुनावत ।
हेरि २ अस परम दृश्य सखि, पुनि २ पिय की सुरति सतावत ॥

छं०— सरस २ सब बिटपन के गन, बन वहु छाई हरियाली ।
तरु तरु की कल २ कुंजन में, कोयलि कूक करै काली ॥
श्याम सघन घन गरजत अम्बर, पबि की लोल लोल लाली ।
जिन लखि सुनि तन काम बढ्यो अब, किमि मैं मान करौं आली

छं०— हेरत ही हरषी निज मानस, तब सहसा विकसी तन वारी ।
प्रेम प्रदर्शन करति प्रेम सों, पुनि पुलकि २ तू प्रिय भारी ।
तव रूप ताप सों द्रवै नहीं, यहि अन्तर तेल नहीं नारी ॥
'लाल' लिपिट जनि ललित लतासी, बाल २ यह कुन्ज बिहारी ।

छं० - कंज कलीसी कलित कामिनी, प्रेम छिपाय परी पलिका ।
यहि मानस मांझ मनोज बढ्यो, भाष सुनत हीं नर अलिका ॥
प्रियतम पेखत प्रेम पगी पुनि, विहँसि उठी कामिनि कलिका ।

'लाल' बाम चित भेट चढ़ायो, गहि अस जस बकरा बलिका ॥

छं०— अब यहि ओर बिलोकि सखीरी, कैसो सोहत यह मधुवन ।
हरित २ तरु बेलिन के मझ, सित २ चरति फिरति गोधन ॥
व्योम बिहाय मनो बिहरन कों, अवनी आये घन के गन ।
जिन को करत कूकि कैं केकी, पुलकि पुलकि मनु अभिनन्दन ॥

छं०— गोधन गन ग्वालन के सह सखि, आवत इनही कलित कन्हाई।
रज रंजित जिन तन अस सोहत, मनो महा मुनि छार लगाई ॥
कानन कुण्डल कीट शीश शुभ, कांधे कामरि अमित सुहाई ।
जोहि २ चहुं ओर चकित से, बांटि रहे मुसिकान मिठाई ॥

छं० - धवल धवल सब गोधन के गन, बीथिन बिचरत लरत लराई ।
इत उत धावत निज निज धामन, जिन पग रज उड़ि नभ नियराई ॥
करत कुलाहल बछरा बछिया, गोकुल गाम अजव ध्वनि छाई ।
सुनि सजनी अस रुचिर राग भरि, मनो निशा शुभ बीन बजाई ॥

छं० - कंचुक कारी पहिरी सारी, पांयन पाइलियां बजणी ।
कटि किंकिनि हिय हार बिराजत. नासा नथ सुन्दर सजनी ॥
तुम तन अस सुठि सुन्दर सोहत, जस वर राका की रजनी ।
विचरति बाट बिलोकति लोगन, अमित 'लाल' लाजति लजनी ॥

छं०— कपटिन कही नहीं निशि मोसों, कानन कुंजन गई अकेली ।
तव तन के यह चिन्ह बतावत, अगनित खेल श्याम सह खेली ॥
उनते ही यह तुमरे गल में, सुमनन की मृदु माला मेली ।
पुनि २ प्रेम करियो प्रियतम ने, जबहीं बहुं हिय हरसति हेलो ॥

छं०— दरसत दाग कपोलन पै तब, अरु इन अति अरुणाई छाई ।
बेंदी बक्रिम भाल बिराजति. कँचुकि सारी सिकुरनि आई ॥
लोचन लोल अलोल लषत जुग, तुवरे तन त्यागी अंगड़ाई ।
रति रण रंग रंगो कुंजन में, आजु तोय अलि मिल्यो कन्हाई ॥

छं०— राका की कल रजनो राजति, आजु अमित ही अम्बर नीला ।
मोसों काल्हि कही इक कामिनि, काल्हि करैं हरि कानन लीला ॥
अम्बर आभूषण सों अब ही, सजि चलि री तू तुरत सुशीला ।

मधुबन मोहन मनोहर सजनी, 'लाल' लखें सुठि रास रसीला ।।

छं० — सकल सुसज्जित स्वर्ण लतन सम, बन आईं गोकुल की नारी ।
जिनकी मूरति मोहति मानस, सब ऊपर बृषभान कुमारी ।।
राका की कल रजनी में जब, मधुबन मझ भीर भई भारी ।
कदमन की कल कुंजन के नत, नारिनि की शुभ बिकसी बारी ।।

छं० — इक कर गह्यो श्याम को इकनैं, दूसर गह्यो एक नारी ।।
इक कामिनि सह इक २ कान्हाँ, गोलाबलि सोहति भारी ।
अगनित नारि नृत्य में नृत्यति' अगनित नृत्यत गिरिधारी ।।
सब के सह श्री श्याम सुशोभित, रुचिर राज हीं सुकुमारी ।

छं० — नवल नृत्य की कल ध्वनि सुनि २, मधुबन आये बन चारी ।।
सारों सारस सारग कोकी, कोकिल कीरन की झारी ।
मृग मृगराज शशक अहि सूकर, वानर बिल्ली गिलहारी ।।
देखत देव बिमानन चढ़ि २ दृश्य सुहाबन सुखकारी ।

छं० — मंजुल मूरति लखि मोहन की, मम मन हेली मोद मनावत ।।
तिन के ता कलित कलेवर के, अंश २ पै पुनि पुनि धावत ।
बरजति हौं पै नेक न मानत, तन हूँ कौं बहु बिकल बनावत ।।
पेखत पुनि पुनि प्रेम पूरि दृग, ललचि २ कैं लाज लुटाबत ।

पद — बृज के धनि २ गोकुल, गांम
जग जन नायक तब वीथिन में, निशि दिन बिचरत श्याम ।
यह जग के लघु बड़ नगरन में, तूही पाबन धाम ।।
अवनी अम्बर रवि शशि स्थिर, तब लौंहीं तब नाम ।
'लाल' लखन हित ललचत नित नित, तब सब दृश्य ललाम ।।

अध्याय ४

मोहन की मुरली

दो० — मोहन की मुरली बजी, कालिंदी के तीर ।।
जड़ जंगम मोहे सकल, सुनि २ धमित अधीर ।

जल थल नभ के जीव सब, उठि धाये ता ओर ।।
बंशो जहां बजावहिं, नटवर नन्द किशोर ।

छं०— अब धरणी पै धवल २ सी, परी चंद्रिका चदकी ।
कुमुदन कलियां सहसा विकसी, महक उड़ी मकरंद की ।।
बंशीबट रवि तनया तट पै, वेनु बजी बृजनन्दन की ।
ओढ़ी आलि करे चलि झाकी, कानन करुणा कन्द की ।।

छं० — मोहन की मुरली की मृदु ध्वनि, मम मन खंडति बहु खंड की ।
चित न चैन छिनक पल पावत, परि करति अटकी अटकी ।।
चलि चलि री तू सह चपला झट, बाट गहैं बंशीबट की ।
लाल लहैं हम सुखद सुधा शुभ, झांकी करि नागर नट की ।।

छं०— बन बेनु बजी बृज बल्लभ की, आली आजु अजब सुर की ।
नर नारिन निज २ काज तजे, पथ २ मोंर चली पुर की ।।
स्वर सुंदर सुनिकें स्रवनन सों, कहा कहों हों निज उर की ।
मेरे मन मंदिर में बृज की, भूरि २ भाषा भुर की ।।

पद — वेनु को मन मोहैं मृदु तान ।
जाकी सुनि २ स्वर लहरी मम, बिकसत तन उद्यान ।।
कालिन्दी के कूल बजाबत, श्याम सकल गुन खान ।
निद्रा नेंक नहीं निशि आवति, नैंन बने पाषान ।।
हे हेली मम सह चलि अबही, हेरैं श्याम सुजान ।

पद— नारि चलि कालिन्दी के कूल ।
वेनु बजाबत मधुर २ ध्वनि, जहं अब मंगल मूल ।।
नौ रस युक्त सरस स्वर लहरी, मम हिय हूलति हूल ।
नेंकहु चैन परत नहिं मोकों, सब तन सालत शूल ।।
'लाल' लखन हित ललचत मम मन, श्याम सुहाबन फूल ।

छं०— ललनि चली ध्वनि सुनि मुरली की, जब बन बाजी मोहन की ।
ध्वनि चपला चपला तन लागी, सुधि बुधि बिसरी सब तन की ।।
भाँति चली चंचल चपला सी, चितवति चकित बाट बन की ।
लाल बाल वह हरषी मानस झांकी करि यदु नंदन की ।।

दो०— पट पुनीत तन पहरि कें; बृज की बृद्धा बाल ।
देखन दृश्य सुहावनों, चले गोप अरु ग्वाल ॥
कामिनि कुल की लाज तजि, सब ही बृद्धा बाल ।
बंशी बट झटपट चली, बेनु बजीता काल ॥
मानव मेघ समूह सम धाये सरिता तीर ॥
चित्र चिते सम थिर रहे, निरखत श्याम शरीर ।
नर नारी हिय हरष ही, वही प्रेम रसधार ॥
जब लालायित लोचनन, निरखे नन्द कुमार ।
सरिता तरु बसुधा लता, सुर समूह सानन्द ।
पुलकि प्रेम सों बोलही, जय जय करुणा कन्द ॥
दो — पशु पक्षी सुनिबाँसुरी, बिसराई सुधि अंग ॥
थाकी सो थिर २ चलें, तटिनी लाल तरग ।
शशी सरिस सोहत सुखद, बंशीबट बृजराज ॥
मावस ही पून्यौं भई, अलि लखि अचरज आज ।

अध्याय ५

ग्वालिनी अरु गोविंद

दो०— मंजन अरु अंजन करयौ, कंगी केश सुधारि ॥
पट पुनीत झट पहरि इक, सजी सुहावन नारि ।
पद— ग्वालिनि गोरस बेचन जाय ।
भूषण बसनन सज्जित रमनो, नागिन सी लहराय ॥
शीश सुहावन कनक मटुकिया, पुनि २ झोका खाय ।
पांयन पायल कल कल बाजैं, जन २रही लुभाय ।
अस तिय लखि २ ललचि 'लाल' निज मानस मोद मनाय।
पद— ग्वालिनि गमनी चंचल चाल ॥
मधुबन की कल कुंजन यहि कौं, मिले नंद के लाल ।
जिन जोहत बहु हरषी मानस, पुनि २ बिहँसी बाल ।
लोचन लोल अलोल बने जुग, परे रूप के जाल

अस अनुराग रँगी कामिनि कौ, किमि कबि वरने हाल ॥

दो०— शीश दहेड़ी धरि चली, दधि बेचन हित बाम ।
मधुबन की कल कुंज में, ताहि मिले घनश्याम ॥
कहत कान्ह कल कुंज में, सुनि नलिनी सी नारि ।
कहँ गमनी गज गामिनी, सत २ भाव उचारि ॥
दीप सिखा सम सुघड़ तिय, छायौ अंग अनंग ।
तुमकौं जाहत ही जरत, मानस रूप पतंग ॥
गोरी २ गुन भरी, रुचिर रूप की राशि ।
तू तिय सजिकैं कहँ चली सत्य सयानी भाषि ।

दो०— बिहँसि श्याम नें अस कही, सुनि ग्वालिनि सुज्ञान ।
पथ कर कर सों दान करि, पुनि तुम करौ पयान ॥
धेनु चरावन हित चल्यौ, शीघ्र प्रिया परभात ।
भोजन बन भेज्यौ नहीं, भूलि गई मम मात ॥
क्षुधा पिपासा लगि रही, ताप तपायौ अंग ।
आनन की छीजी छटा, भयौ सुरंग कुरंग ॥
निर्भय बृंदाबन चली, बिसराई भय बाल ।
नहिं जानति जा बन बसत, गिरिधारण गोपाल ॥

पद— ग्वालिन गोरस करिकें दान ।
गोरस बारी गोरी २, तब तुम करौ पयान ॥
मधुबन पथ कर दधि इक दौंना, यहं अस बन्यौ विधान ।
कहँ २ श्याम सुनि नव नलिनी सी, नारो नीति निधान ॥
तुरत दान करि गोरस गोरी, तजि निज रूप गुमान ।

पद— योवन नित्य नहीं तव नारि ॥
बारि बबूला सम कल काया, रूप गुमान बिसारि ।
सुरभित सी तव तन फुलवारी, बिकसै यह दिन चारि ॥
यहि की इक दिन छवि छीजे जब, बैठि जाय मन मारि ।
छिन नस्वर संसार सकल सुनि, सुन्दर सी सुकुमारि ॥

छं०— शीश सुहावन मटु की धरि कें, कहं गमनी नव ग्वालिनि गोरी ।

चंचल चाल चलति चपला की, कुंजन कूजें पायल तोरी ।।
सुनि शुभ ध्वनि कानन कानन सों,भ्रमित भई सिगरी मति मोरी ।
मंद २ मुस्कावति चितवति, चपला तू करिकें चित चोरी ।।
छं० - सुनि नारी गोरस वारी अस, कानन कुंजन कान्ह कही है ।
यहि मधुबन पथ की कर कामिनि, केवल दौंना एक दही है ।।
नहि नाहति ननि ध्यान करति दवि, दामिनि सम हंसि राजि रही है ।
सुनति नहीं तू नव नलिनी-सी, बृंदावन की बाट गही है ।।
छं० -- बिहरि रही बाघिनि-सी बन-बन, विपुल विकल कत वर बाला ।
पांयन पायल छुम २ बाजें, मन मोहै मंजुल माला ।।
यहि मधुबन की कल कुंजन में, करति अमित ही उजियाला ।
भाव भाषि सब निज मानस के, जन मन भावन मधुशाला ।।
छं० — इत उत चितवति चंचल नैनन, कत सुनति नहीं तू नव-नारी ।
पथ की कछू बिन दिसे बावरी, बृन्दावन की बाट सिधारी ।।
कछु कहँति नहीं निज आनन सों, बार २ इमि कहो विहारी ।
जाको कर जब गह्यो मुरारी, तब वह बिहँसी गोरस बारी ।।
छं० — अंचल आनन सों उन्नत करि, कामिनि कल २ सी भाषी ।
क्षमा करौ अपराध माम के, अजर अमर अज अविनासी ।।
गोरस तव हित ही यह गोविंद, चरवौ चखावै यह दासी ।
चिर चिंतन हौं करति रावरो, गुन गर्भित गोकुल बासी ।।
छं० — लोचन लखत थके जुग मेरे, करयो कहां तुम बाट बसेरो ।
कहि कामिनि कैसें तू गोरस, लैकें आई आजु अबेरो ।।
मन मलीन छबि छीजी तन की, देखत दुखी भयो मन मेरो ।
बार २ बृजराज पुकारे, गोरस ग्वालिनि नीक न तेरो ।।
छं० — बोरी वृद्धा नहीं नारि तब, अब ही आयु नबेली है ।
प्रेम पगी सी रूप ठगी सी, तब संग न एक सहेली है ।।
योवन के मदमाती अथवां, गमरा गुरू की चेली है ।
किंवा काहू विरह बिकल वन, बिचरति आजु अकेली है ।।

अध्याय ६

श्री राधा अरु कृष्ण का प्रथम मिलन

दो॰ कहैं करोरन कामिनी, अगनित गुन गोविंद।
किस शुभ सर विकस्यौ अली, अस अनुपम अरविंद॥
यहि बृज की बहु बालिका, करै कृष्ण गुन गान।
जिन जोहन जुवती फिरैं, गुमा ज्ञान विज्ञान॥
सुंदरता सुनि श्याम की, अलि ललचत मन मोर।
कहा यतन करि राधिका, निरखैं नंद किशोर॥
मम मन मचल्यौ सुनि सखी, हरि दरसन के काज।
पल २ भारी परि, रह्यौ, अति अभिलाषा आज॥
दारुण दुख सालन लग्यौ, तन मन को दुरहाल।
मोर मरन निश्चय अली, बिन निरखे नंदलाल॥
कहौ कान्ह कैसौ सखी, जासौं भट भयभीत।
असुर बधे बलवंत जिन, जन २ गावत गीत॥
भाषति सखि सुनि राधिका, बात बतावति तोय।
कथा कहौं ता श्याम की, सब ही परिचय मोय॥
परिचय सुनौं सुश्याम को, पर सुनाम घनश्याम।
मात यशोदा नंद पितु, निबसत गोकुल गाम॥
कला कुशल सब युद्ध की, बल पौरुष भरपूर।
अगनित शत्रु पछारि हरि, कीन्हे चकनाचूर॥

दो॰ नीलाम्बुज के सरिस शुभ, सोहत हरि को अंग।
याहि लखत ललचत फिरत, नित २ सबल अनंग॥
बिचरत बन अरु बाटिकन, नित ही नंदकिशोर।
काँधे धरिकें कामरी, चतुर चरावत ढोर॥
बेनु बजति बृजराज की, जब बन में मृदु तान।
जड़ जंगम मोहित करति, हरति भामिनी मान॥
कानन कुंडल कान्तियुत, मुकट मनोहर भाल।

ललित लकुटिया कर कमल, हरि हिय राजति माल ॥
मैं मोहन सों मिलन कौ, यतन बतावति तोय ।
दधि वेचन मिस राधिका, दर्श श्याम कौ होय ॥
हम तुम बृन्दावन चलैं, दधि बेचन मिस बाल ।
मधुबन में निश्चय मिलैं, गुन गर्भित गोपाल ॥
बचन नींक सुनि राधिका, बिनय करति बहु बार ।
सखि तव संमति माम कौं, हर्ष सहित स्वीकार ॥

दो०— प्रेम पंथ चलि राधिका, काहु न पायो चैंन ।
आस अँगारन बहु जरे तड़पि २ दिन रैंन ॥
मेरे मन भायौ नहीं, क्रूर राग कौ रंग ।
दीप सिखा सह दाहि तन, का सुख लह्यौ पतंग ॥
अली आगरी मानि जनि, परै प्रेम के फंद ।
उड़त चकोरी मरि गई, मिल्यौ नहीं नभचंद ॥
मरन नींक अलि आगरी, करति प्रीति नित तंग ।
मोहित मन मानत नहीं, रँग्यौ श्याम के रंग ॥
प्रेम पयोधि अगाध अति, अरु दुख दायक सोय ।
यहि कौं लाँघत हौं लख्यौ, बिरला ही जिय कोय ॥
कपट करौं तोसों नहीं, सुनि सखि मन की बात ।
तड़पि २ कें आजु की नोंठि निकारी रात ॥
मंजय करि निज अग कौ, आँखिन अंजन सारि ।
पुनि पट पहिरे परम बहु, नवल निराली नारि ॥

छं०— निरमल जल सौं सुन्दरि न्हाई, अति अतरन अंग सुधारयौ ।
भूषण भावन तन पट पहिरे, पुनि अंजन नैनन सारयौ ॥
कचकारे बहु सुमुखि सम्हारे, अरु तेल सुगंधित डारयौ ।
'लाल' सुभाल सुहावन बिंदी, सों मान शशी कौ मारयौ ॥

छं० — सखी सुनों उन शुभ भावन कौं, जिन कौं हौं दिन रैंन विचारौं ।
असत न भाषों सपथ तात की, सबही अनुचित उचित उचारौं ॥
मेरे मन में ऐसी आवति, अब हौ निज धन धाम बिसारौं ।

अति अगाध रंग रंगी राग के, वन विचरौं बृजराज निहारौं ।

पद— श्याम के चलिकें दर्श करैं ।
सखी शीघ्र चलि संग माम के, मन नव भाव भरैं ।।
ता सुख सागर कौ लखि २ निज, मन तन ताप हरैं ।
निर्भय विचरैं बन कुंजन में, काहू डर न डरैं ।।
सुख की बरषा बरषै जबहीं नैंनन नैंन लरैं ।

दो०— शीश दहेड़ी धरि चली, निज जननी के धाम ।
करि प्रणाम निज मात सौं, भाषति अस शुभ बाम ।।
मोय मनोहर देव के, दर्शन की अति आस ।
अनुमति याचन मात मैं आई तुमरे पास ।।
सुख दायक सौ देवता, हरत अनेकन ब्याधि ।
बृज के तावर देव को, चली साधना साधि ।
पूजा हित हरदी धरी, रोरी अच्छत फूल ।
पूजन जाऊं देव वह, कालिंदी के कूल ।।
दधि माखन यह भोग हित, भेट करन हिय हार ।
प्रिय पूजैं मम कमल कर, परसि २ बहु बार ।।१
युवा बालिका बाट में, इकली जाय न कोय ।
दुरघटना के घटत बहु, अहित लाड़ली होय ।।२
सखी सयानी संग बहु, बरषाने की नारि ।
मात सत्य ही भाषिहौं, पापी कपट निकारि ।।३
सत्य भाषिनी मम सुता, सुन्दरता की खान ।
कीरति तुमरी चिर रहै, जननी को वरदान ।।४
तोर विनय वर बालिका, जननी को स्वीकार ।
पूजा जाओ देव वर, अस आदेश हमार ।।५

दो०— लहिकें हरदो हर्ष को, मन भावन के फूल ।
प्रिय पूजन राधा चलीं, कालिंदी के कूल ।।६
चंचल गति चपला चली, रंगी राग के रंग ।
[illegible]न ही ताकी बाट में, मन मोहन के सं[illegible] ।७

पद — तीय के अति ही अंग उमंग ।
नव पट भूषण भूषित जब यह, चली सखी के संग ।
पुनि २ सुरति श्याम को आवति, सालत अधम अनंग ।
जन २ मन मोहत लखि यह कौं, रौंन २ तन रंग ॥
बिचरत बनबारी बृन्दा कौ, मानस बन्यो बिहग ॥

पद — सखी कब देखौं श्याम सुजान ।
रजनी युग सम बोती तड़पत, उड़गन गनत बिहान ।
सुनि सुंदरि अब मम मानस में, नहीं मान अपमान ॥
दर्श करौं हौं बृज बल्लभ कौ, ऐसी ठानी ठान ।
लखि २ अरु पुलकि २ कें, करौं प्रेम पय पान ॥

दो० — बृन्दाबन की बाट गहि, बरषाने को बाल ।
अति चंचल गति सौं चलीं, देखन दीन दयाल ॥
चलत २ अलि आगरो, बीति गयौ बहुकाल ।
पल २ भारी परि रह्यौ, कहा कहौं हिय हाल ॥
मम मन आतुरता अमित, पीय मिलन की आस ।
बृज बल्लभ किस बन बसत, शीघ्र चलैं जिन पास ॥
मधुबन बंशीबट कहाँ, कालिंदी के कूल ।
मेरौ मन मोहन कहां, सखी सुगंधित फूल ॥
धेनु कहाँ बृजराज कीं, कहँ गोकुल के ग्वाल ।
कालित कामरी कहि कहाँ, लकुटी बंशी बाल ॥
धीर धरो उर राधिका, नियरैं कृष्ण निवास ।
अब बिलम्ब नहिं दश में, हम मधुवन के पास ॥
मधुबन के लखि बिटप बहु, लसित लहलहे जोय ।
जिनको ही कल कुंज में, निश्चय मोहन होय ॥
कदम तरुन बिकसीं कली, बोलि रहे बन मोर ।
मधुर २ गुंजन करत, चचरीक चहुं ओर ॥

पद — मधुबन छबि छाई चहुँ ओर ।
हरित २ तरु २ के ऊपर, बोलत मोर चकोर ।

सुक सारस श्यामा पिक पपिहा, रहे चित्तन कौं चोर।
वल्लरि विटपन विकसीं कलिका, लखि उर उठति हिलोर।
'लाल' लखत जिनकी कुंजन में, विचरत नद किशोर॥

पद— मेरी एक बात सुनि ग्वाल।
भाषति तोसौं वन कुंजन में, बरषाने की बाल।
यहि मधुवन में तुम कहु प्रिय अव, जोहैं मदन गुपाल॥
आपन पावन आनन सौं सब, सत २ भाषौ हाल।
श्याम संदेशौ सुनत माम कौ, निधन होय भ्रम जाल॥

पद— सुनि शुभ गोर वरण की वाल।
रवितनया तट अरु वट के नत, बिद्यमान नन्दलाल।
हौं अब आपन आनन सौं सब, सत २ भाषौं हाल॥
बछरा बालक गायन के गन, जिन नियरैं बहु ग्वाल।
जिनके मध्य बृजराज बिराजत, सकल जगत प्रतिपाल॥

पद— तुमहि इक तीय बुलावति श्याम।
श्याम २ कहि बन कुंजन में, करति फिरति कुहराम।
लगन लगी मन अमित रावरी, रटति रावरौ नाम॥
आपन नाम बताबति बृन्दा, अरु बरषानौं गाम।
जाके हित बरषावहु अबहीं, नेह नीर घनश्याम॥

पद— विराजैं वट के नत बृजराज।
ग्वाल बाल बहु बैठे जिन सह, सजे सुशोभित साज।
कोऊ नृत्यत गावत कोऊ, धावत काऊ काज॥
क्रीड़ा करत फिरत बहुबन में, बिहँसत बाल समाज।
'लाल' लखत अस दृश्य सुहावन मुदित भई तिय आज॥

दो०— कहँति सखी सुनि राधिका, बट के नत बृजराज।
सखा सहित लखि राजहीं, सजे सुशोभित साज॥
अस मन मानत भाविनी, सिद्धि होंहि सब काज।
शुभ सकुन चहूँ ओर सौं, निरखति हौं अलि आज॥

मीन सुखी जिमि जल मिलत, रंक सुखी धन पाय ।
अस ही हिय राधा सुखी, शरण श्याम की जाय ॥
लखि सुधि बिसरी राधिका, श्याम शशी की ओर ।
छकत नहीं हरि दर्श सों, लोचन चारु चकोर ॥
चलति न बैठति बाट में, नहिं आनन सों बैन ।
इक टक हरि हेरति ठड़ी, ठगे राधिका नैन ॥
यह आवति अति आतुरी, सखा सयानो नारि ।
इन नैंनन निरखो नहीं, ऐसी कलित कुमारि ॥

दो०— कनक लता सम कामिनी, बिंदी दीपित भाल ।
शरद शशी उतर्‌यो मनो सुंदर बसुधा 'लाल' ॥
भृकुटी कुटिल कमान सी, तिय के कल २ नैंन ।
सरमावति सुनि कोकिला, मधुर मनोहर बैंन ॥

छं०— कानन कामिनि बिहरि रहीं यह, सब छबि छीन करति छबी की ।
धरणी धाई प्रातकाल को, कलसी किरनि मनो रवि की ॥
चचल चाल चलति ऐसी लखि, चंचलता लाजति पबि की ।
जा जोहत ही मानस मोहत, अति २ मंद करति कवि की ॥

छं०— कल काया लखि कें कामिनि की, मेरौ यह मन मत्त लुभायौ ।
चितवनि चाल चारु चित चोरति, रूप सुहावन नैंनन छायौ ॥
अधर घटान रदन द्युति दमकी, सुख सागर सौ नियरैं आयौ ।
विहँसि कही बहु बार बिहारी, राज तिहू पुर कौ पलपायौ ॥

दो०— लै चलि रे सुंदर सखा, अस सरिता के तीर ।
जाकी कल कल लहर लखि, सीतल होय शरीर ॥
अंजन अंजें कामिनी, आनन अंचल डारि ।
ईक्षन तीक्षन शरन सौं, बींधि २ जनि मारि ॥
कलित कलेबर नारि कौ, निरखत हो नंदलाल ।
निज मन मधुकर की दशा, कहन लगे ता काल ॥

छं०— अधर अरुण सित श्यामल नैंना, ऊषा सी सब अंग मली है ।
लौंयन लागी सीलतता सी, हेरत ही सुठि रूप लली हैं ॥

जाकी जोति परत ही बिकसी, मन नीरज की कली २ है।
कुंद कली सम 'लाल' राधिका, लखि२ ललचत श्याम अली है।।

दो० — यहि बृज की वर सुन्दरी, भाषौ निज शुभ नाम।
कौन जनक जननी जनो, बसति कौंन कल धाम।।
तुबरे सह यह कौन तिय, कहाँ जायँ बृज बाल।
सो सब भाषौ काज निज, पूछि रहें नंदलाल।।
बरषानौं शुभ नगर मम, राधा भाषत नाम।
सुता श्रेष्ठ बृषभान की, सत्य बतावति श्याम।।
अलि ललिता यह माम की, बचपन को सतसंग।
कपट करति नहि कामिनी, रंगी एक हम रंग।।

पद— नारि के नैंनन नीर भर्यौ।
जब सौं यहि कामिनी के गल में, प्रेम सुजाल पर्यौ।।
मोहन की मृदु मंजुल मूरति, हेरत हयि हर्यौ।।
जिनके जुग शुभ बढ़ नैंनन हूँ, शर कौ काम कर्यौ।।
'लाल' लखत अब यहि बृन्दा को, सकल सुकाज सर्यौ।।

छं०— कहि किन पूजन जाय सखी शुभ, तब थार धरे अक्षत रोरी।
दंतन द्युति विद्युत सी दमकति, गज गति गमनीं नवल किशोरी।।
इत उत चितवति चैन नहीं चित, जुग नैंन फिरत तब चकडोरी।
कहि कत तू नहि मानति गोरी, मन मोहि रही जोरा जोरी।।

छं०— मंद २ मुसिकाय चलौ कहँ, मुक्तन की सी मालिका।
पंकज की सी कोमल कलिका, प्रेम प्रथा की पालिका।।
श्याम कहँत सुनि सुघड़ सजीली, रुचिर रीति संचालिका।
विचरनि बिकल आजु कत बन में, वर बालिक की बालिका।।

छं०— भाल लसित अस टीकौ यहिके, सोहत शशि जस अंबर आधा।
नैंन ऐंन अस रुचिर राजहीं, आइ अहेरिनि जस शर साधा।।
हीरक की सी तन द्युति दमकति, निकट नहीं आवति इक बाधा।
श्याम चकोर को हिय हारी, राका शशि सी सुन्दर राधा।।

दो॰— तब आनन अरविंद पै, मम मन अलि मड़राय ।
मोहनि मूरति मुदित ह्वै, तनिक प्रेम रस प्याय ॥
शशी सरिस शीतल करौ, हँसि बोलौ पुनि बाम ।
तब मृदु मोहन मंत्र सौं, मिलत मोय आराम ॥
मोहनि मूरति हँसाति जब, मादक मिलत मिठास ।
बिज्जु सरिस संचार करि, तन मन करति प्रकाश ।
प्रेम पगी यह राधिका, बिनय करति बृजराज ।
शरण आगता राबरी, प्रेयसि प्रियतम आज ॥

पद— मेरी बिनय सुनौं नंदलाल ।
तब दर्शन हित मधुबन आई, यह बृन्दा यहि काल ।
निरखत नव शुभ रूप रावरौ, कटे सकल भ्रमजाल ॥
निज तन मन तब भेंट करन हित, लाई दीनदयाल ।
याहि करौ स्वीकार तुरत तुम, हे बृज के प्रतिपाल ॥

दो॰— सेवा करै सुसेविका, सदाँ रावरी श्याम ।
यश बर्णन बृजराज कौ, मम रसना कौ काम ॥
लोचन ललचत दिवस निशि, सुनत रावरौ नाम
सो आसा पूरन भई, निरखि आजु घनश्याम ॥
रंजित रंग हौं श्याम हीं, दूसर नहीं सुहाय ।
निज मानस के माँझ मैं, लीये श्याम बसाय ॥
मंजुल मूरति रावरी, देखत दीन दयाल ।
सब सुधि बिसरी अंग की, बरषाने की बाल ॥

छं॰— हेरत हरि की मंजुल मूरति, मम मन में नव ज्योति जगी ।
नींके नर नहिं लागत जग के, एकहि सौं सत लगन लगी ॥
ललचत नैंन चैंन नहिं निशिदिन, साजन के शुभ रूप ठगी ।
बाल बखानति सुनि शुचि आली, अब हौं पावन प्रेम पगी ॥

दो॰— मन मानी मानत नहीं, करत क्रूर बहु तंग ।
बिकल करत हर याम यह, रँग्यौ राग के रग ॥

प्रेम पयोधि पवित्र अति, बाट बृहद् बिकाल ।
संकट सहि २ गमन करि, बरषाने की बाल ॥
प्रेयसि सुनों सुराधिका, समझावत अस श्याम ।
प्रीति करौ परतीति करि, मिलै सुमंगल धाम ॥
आदि अनेकन दुख परत, अंत समय सुख होय ।
बिटपि रोपि पोषण करत, पुनि फल चाखत कोय ॥

दो॰— मम मन बिधना अस रच्यो, करत सदां परतीत ।
मेरी अरु हरि रावरी, अटल रहे शुभ प्रीत ॥
सुन्दर सूरति रावरी, सदां रहे मम साथ ।
तुम मोहन मम मन बसे, भूलों नहिं बृजनाथ ॥
कठिन कसोटी कसि करौ, निज जन की पहंचान ।
क्षमा हौंहि नहिं यातना, मेरौ यही बिधान ॥
प्रेम पंथ बहु कंटकित, हे बृज केरी नारि ।
बिजय पाय बिरलौ गयो, रहे हजारन हारि ॥
दारुण दुख निशिदिन सहौं, सुख नहिं सुपने होय ।
हे पथ पावन प्रेम के, भूलति जौं नहिं तोय ।
पावन पथ बहु प्रेम कौ, स्वयं भाषते श्याम ।
मेरे मानस हूँ बस्यौ, जा सुरोग कौ नाम ।
पुनि २ भाषौ भाविनी, बतरस की मो भूक ।
बरषाने की कोकिला, सुनां सुहावन कूक ॥
तुम हित दधि नवनीत यह, लाई दोन दयाल ।
प्रेयसि कौ परसाद चखु, प्रेम सहित नंदलाल ॥
अति अनुरागिनि राधिका, चली श्याम की ओर ।
उर उदधिन स्नेह की, उठने लगीं हिलोर ॥

छं॰ — प्रेम पूरि दधि परसति राधा, पान करत पुनि २ गिरिधारी ।
सुख सागर सुख सरिता बूढे, निरखत हीं शुभ नवल कुमारी ॥
चारि चारु चक्षु मिलें परस्पर, जब भाव भरे मन घट भारी ।
सुघड़ श्याम को चित चोर्‌यौ छिन यहि गोरी सी गोरस बारी ॥



दो०— गोरस परसत राधिका, पान करत गोपाल ।
हृदय उदधि उमहन लगे, प्रेम तरंगन 'लाल ॥
बरषाने की राधिका, गोकुल के गोपाल ।
दोऊ एकही रंग में, बिछा प्रेम कौ जाल ॥
बरषाने की राधा रमणी, नंद तनय गोकुल बासी ।
मधुबन मिले एक दिन दोऊ, सुख सरिता अरु सुखवासी ॥
जोहत हीं हरि यह हिय हरषी, पल गल परी प्रेम पाशी ।
बृज बल्लभ की हौं सत दासी, तिय अस भाव भरी भाषी ॥

दो०— गोरस करिकैं पान पुनि, कहत सखा सौं श्याम ।
गोरस माखन खाय तुम, करौ आपनों काम ॥
प्रेम पग्यौ परसाद गहि, गुन गोबिद के गाय ।
अटल रहै अनुराग यह, सखा कही हरषाय ।
महि रवि शशि जबलौं रहैं, तबलौं ही जुग नाम ॥
नित २ ही नर नारियां, भाषैं राधेश्याम ।
गंधि तजत नहि सुवन जस, किरनि तजति नहि चँद ।
अस ही हौं त्यागौं नहीं, तुम्हैं सच्चिदानंद ॥
लोभी धन ममता तजै, कामी बाम बिहाय ।
राधा तजै न नंद सुत, भाषति हाथ उठाय ॥

दो०— शशि हू शीतलता तजै, दिनकर तजि है ताप ।
पै तजै न यह राधिका, पिय की प्रेम अलाप ॥
तड़ित तेज सम तन लषित, बरनन बनत न 'लाल' ।
बाढत बेग मनोज के, बनीं बावरी बाल ॥
करौं निमंत्रित तुमन मैं, नाथ करौ स्वीकार ।
अयन पधारौ माम के, यह आग्रह बहुवार ॥
राधा रमणीं अस कही, हरषे सुन्दर श्याम ।
परसौं तरसौं आइ हौं, प्रेदसि तुवरे धाम ॥
कलित करन कौं जोरिकें, करति तीय परनाम ।
बृन्दा बरषाने गई, गोकुल गमने श्याम ॥

अध्याय ७

श्री बृजराज की विरह वेदना

दो०— मेरे मन मन्दिर बसी, सखा सुहावन नारि ।
गुनन भरी वह गोपिका, गई प्रेम रंग डारि ।।
किस बिधि सौं बर्णन करौं, ता युवती कौ ढंग ।
शील शुभाव सुलोचनी, सुबरन सरिस सुरंग ।।

पद— नारि के नैना रुचिर विशाल ।
रदन पक्ति अस सोहैं जस जुग, मुक्तन की कल माल ।
अधर कपोल कान कल नाँसा, भावन भृकुटी भाल ।।

कल २ कुच कटि कंठ गमन गति. अस जस चलत मराल ।
कर पद शुभ तन तेज अमित लखि, मोहे मदन गुपाल ।।

दोहा— यहि बृज की वर बाघिनी, आई करन विहार ।
मम मानस कों मोहि वह, गई छिनक में मार ।।
नथ सोहति शुभ नाशिका, दिपत जुझाऊ कीर ।
हेंमहि हरवा हिय लसित, दमकि रहे नग हीर ।।
नाँसा अस ता तीय की, लखि सरमावत कीर ।
भृकुटी कुटिल कमान सम, लोचन तीखे तीर ।।
तिय आनन अरबिंद सम, अधर अरुण अनमोल ।
दंतन की द्युति देखि कैं, गयौ श्याम मन डोल ।।

दो०— नवल नारि को गुन सखा, किस विधि वर्णन होय ।
आनन मोरे एक ही, रचे नही विधि दोय ।।
प्रेम पंथ पग परत ही, सुखी नहीं यह श्याम ।
सखा सकल रजनी गई, रटतहि राधा नाम ।।
विथा विरह की वहु बढी, परत नहीं चित चैन ।
राधाजी कौ रूप रस, पीवन चाहत नैन ।।

छं०— बीधि २ बहु बिकल बनायौ तियके ईक्षन तीछन तीरन ।
नित तन तड़पत तनिक चैन नहिं, सहौं कहौ किमि ऐसी पीरन ।।

छिन्न भिन्न क्षत छिद्रन युत यह, मम मृदु मानस धारत धीरन ।
लाल' बिहालन सों जीवित हों, आसा की कल सुखद समीरन ।।

दो०— स्वच्छ सिता नवनीत गहि, मिश्रत कीन्हैं मात ।
परसति हरषति पूत हित, पुलकि २ हरि खात ।।
व्यंजन बिबिधि प्रकार के, परसे सब सानंद ।
जैंवत जिन हरि प्रेम सौं, प्रेम पगे बृजचंद ।।
भोजन करि निश्चिंत भे, जब जशुदा के लाल ।
जय बोलत बृजराज की, आगमने तहँ ग्वाल ।।
मेरे सुन्दर शुचि सखा, दामा बाँके बीर ।
आभूषण अनमोल बहु, लै चलि लहँगा चीर ।।
मसीपात्र अरु सूचिका, लै झोला में डारि ।
सर्ब वस्तु सग्रह करौ, बनौं आजु लिलहारि ।।
धेनु चरावन हम चलत, सकल ग्वाल अरु बाल ।
तुम मम ता आदेश कौं, सखा करौ प्रतिपाल ।।

दो०— गाय चलीं गौशाल सौं, गमने नंदकिशोर ।
बाट गही ता विपिन की, हरित लसित चहुं ओर ।।
लता तरुन बिकसे कुसुम, छाई बिपिन बहार ।
भौंर झौंर जिन झूमहीं, मधुर २ गुञ्जार ।।
पपिहा पी २ करत बहु, बोलत बन मभ्फ मोर ।
शशीसरिस लखि श्याम मुख, चितवति चकित चकोर ।।
कोकिल कलरब करति बन, कलित कदम की डार ।
स्वागत करति सुश्याम कौ, कूकि २ बहु बार ।।
सित सारस अस शोहहीं, ठाड़ तड़ागन तीर ।
जिमि जे रक्षक बिपिन के, बिन आयुध के बीर ।।
दृश्य देखि अस श्याम शुभ, बढ़ो बिरह की पीर ।
बिकल बनाये बेदना, होंने लगे अधीर ।।
सर्व वस्तु संग्रह करीं, दामा चतुर सुजान ।
जिन गहि तीछन गति चल्यौ, जहां कृष्ण भगवान ।।

दामा दीन दयाल के, निकट गयो ता काल ।
जरतबिरह की ज्वालसौं, निरखे नंद के लाल ॥
करुणा करि कहने लग्यो, सखा सुहावन बात ।
बलि जावौं बृजराज की, तजो बिकलता तात ॥
अनुमति सो शुभ रावरी, पूरन करिकें श्याम ।
अब ही आयो विपिन हौं, हे करुणा के धाम ।

अध्याय ८

ललित लिलहारि

दो०— कलित कटि सुलहंगा लसित, शीश सुहावन चीर ।
चोली चकित नितकरति, चितवत द्यु ति नगहीर ॥
व्यालिनि सम बैंनीं गुही, मेलि सुमाँग सिंदूर ।
भाल भली बेंदी लसित, दमक भई भरपूर ॥
कनक नथुलिया नग जटित, पहिरी नंदकिशोर ।
दमकति अस यह नाशिका, जस निशिकर कोकोर ॥
करन काँच की चूड़ियां, कंचन को हिय हार ।
कलित कड़े कलधौत के, पहिरे नंदकुमार ॥
पायल पनहों पहरि शुभ, छवि छाई पग दून ।
अद्भुत आभा करत जिन, जड़े सुतूल प्रसून ॥
मसीपात्र धरि सूचिका, काँधे झरी डारि ।
सुघड़ सुहावनि साँमरी, श्याम बने लिलहारि ॥
दामिनिसम दमकन लगी, सुघड़ सुसज्जित नारि ।
मन मानस को मोहही, लोला गोदन हारि ॥

छं०— लहँगा पहरि ओढ़नी ओढ़ी, उर राजति कंचुकि कारी ।
आँखिन अंजन अंज्यो कारो, नासा नथ नगन बारी ॥
पाँयन पायल पनहीं पहिरीं, जिनकी ध्वनि मंगल कारी ।
मसीपात्र शुभ सूची धरिकें, झोरी इक कांधे डारी ॥
हेरत ही यह मानस मोहै, श्याम २ सो लिलहारी ॥

छं०— बार बार जब हँसे सुदामा, हरि को लख्यो रूप रमनी को ।

भाषत अस तब तन प्रभु शोहत, जैसी रूप रंग रजनी की ।।
जा जोहनहित तरु बहु अँकुरे, मनो हियौ उमह्यौ अवनी कौ ।
शीघ्र सिधारौं बरषानें प्रभु, दर्श करौ तुम विधु वदनी कौ ।।

दो०— चली ललित लिलहारिनी, बरषाने को बाट ।
दामा लखि अति मुदित मन, निरखि नारि कौ ठाट ।।
लखति चलति लिलहारिनी, मग के बिटप तड़ाग ।
बरषानें नियरैं गई, बाढ्यौ लखि अनुराग ।।
बन उपवन बहु बाटिका, कल कल सी चहुं ओर ।
बिटप बिटप सों भाषहीं, परिहा पिक अरु मोर ।।
कलित कूप सर शोहहीं, बहु बरषाने गाम ।
अस शुभ दृश्य बिलोकि कैं, राग रँगे घनश्याम ।।
बरषाने के सब सदन, रचे रुचिर ही ढंग ।
जिनके अंतर बाहिरै, चढ्यौ सुनहरी रंग ।।

छं०— बरषाने बन सर कूपन, छाय रही चहुँ ओर घटा ।
कूपन नीर भरैं पनिहारी, अवनीं उतरीं मनो घटा ।।
धवल २ सब धाम सुहावन, जिन ऊपर अनमोल अटा ।
"लाल" लखत इन हरि मन मोह्यो, राधा २ नाम रटा ।।

दो०— आये लखि ललिहारिनी, बालन के बहु बृन्द ।
सहसा सबके भाषसौं, हौंन लग्यौ जब कुन्द ।।
सुनों सुशीला शशि मुखी, श्याम वरण की बाल ।
तब आगम किस काज हित, भाषौ हिय कौ हाल ।।
किस सर की नव नीरजा, सुमुखि करौ का काम ।
ब्याही अनब्याही कहौ, तुम नारी निज नाम ।।
कहन लगी लिलहारिनी, बालन सौं अस बैंन ।
प्रिय प्रियतम के दरशहित, तड़पि रहे मम नैंन ।।
हौं तिय गोकुल गाम की, गोविन्दी मम नाम ।
लीला गोदौ ललित अति, नित कौ ही यह काम ।।

छं०— लीला गुदवाओ सब बाला, लिलहारिनि निज निकट बुलावै ।

गोदों गुन गोरव मृदु मूरति, जब तुम अंग अमित छबि छावै ॥
मित नव नेह मिलै प्रियतम कौ, सो लीला निज अंग गुदावै ।
सत २ कहौं असत नहिं भाषों, सुख समूह सब नियरैं आवै ॥

दो॰— कहन लगी इक कामिनी, सुनौं सुनैंनी नारि ।
राधा जी के सदन कौं, शीघ्र चलौ लिलहारि ॥
मंत्र मनोहर सुनत ही, चली ललित लिलहारि ।
बानिक लखि वर बाल कौ, प्रमुदित सब नर नारि ॥

छं॰— बरषाने की बर बीथिन में, विचरि रहीं शुभ लिलहारी ।
बाल बालिका नर नारिन की, जा सह भीर भई भारी ॥
बानिक निरखि २ कें यहि कौ, मुग्ध भये बहु नर नारी ।
'लाल' लखत ही लिलहारिनि कौं, कहन लगी इक सुकुमारी ॥

छं॰— सुनि श्याम २ सी लिलहारी, शुभ नैंनम नेह झरत तेरे ।
अस सुन्दर जग कौ जग जागे, तुमरे मन माँझ डरे डेरे ॥
कहि किन के कंज कलेवरु पैं, मन मधुकर के पल २ फेरे ।
चितवति चकित दशहु दिशि कामिनि, चैंन न नेंकहु साँझ सवेरे ॥

छं॰— नव नलिनी सी सुघड़ कामिनी तनिक नहीं तू प्रेम पगी है ।
अबलौं अक्षत सुरक्षित सुरभित, मानस मधुकर ठग न ठगी है ॥
निज पावन प्रियतम की कव तब, मानस माँझ न लगन लगी है ।
तव तन जस तस ही शोहत नहिं, दूसर काऊ रंग रंगी है ॥

छं॰— सुनि सुघड़ सुनैंनी सुकुमारी, तू श्याम लता सी लहराई ।
रुचिर रूप रचि रंभा रमनी, किंवा उमा आजु यहँ आई ॥
बरषाने की इन बीथिन में, अब अति ही अनुपम छबि छाई ।
नीलमणी की कलित कणीं सी, सब मूरति मन माँझ समाई ॥

छं॰— लहर २ लहराय रही अस, जस शुभ सुरमित श्याम लता ।
बिहँसति बहु करि बंकिम चितवनि, उररांची वर बात बता ॥
तुमरी मंजुल मूरति नैं यह, मम मन मोह्यौ महा मता ।
भाषि सुभाष बाल मन भावन, तू अलमोल अजब अछूता ॥

छं॰— निज कल कर कौं उन्नत करिकैं, बार बार इक बाल पुकारी ।

आजु अजब सब सुनौं संदेशो, महि मंडल के सब बुधिधारी ॥
कहा कहौं कछु कह नहिं आवै, विधि अब यह नवनीति निकारी।
बरषाने की बर बीथिन में, नारि रूप लखि रीझी नारी ॥
छं०— तिय तब रूप पराग पियें छिपि, मन नैनन सीखी नब चोरी।
बरजति बहु पै नेंक न मानत, जोहत हैं जे जोरी जोरी ॥
अंस २ विचरत तव तन के, रुचिर रूप को कलित किशोरी।
'लाल' लखन हित ललचत है नित, चित्त चढ़ी शुभ चितवनि तोरी ॥
छं०— जननी जनक कौंन जिन जाई, कहा कहौ कल नाम तिहारौ।
कियते तात मात के जाये, भ्रात भाव सों जिन्हैं निहारौ ॥
नित निबसति सो नगर कौंन तव, सुन्दरि ताको नाम उचारौ।
पुनि २ पूछति वाल विकलसी, निज परिचय कहि सुमुखि सिधारौ ॥
पद— लखि लखि श्याम बरन लिलहार।
बरषाने की कल बीथिन में, प्रमुदित सब नर नार ॥
अरु जिनके मन निधि में पुनि २, बहुँत प्रेम रस धार।
सकल नारि नर रंगे श्याम रँग, दुर मन भाव बिसार ॥
नेह नीर बरसावत उमहत, लोचन जलद अपार ॥
दो०— पानी पी प्यासौ सुखी, प्रेयसि ज्यौं प्रिय पाय।
अस ही हरि हरषे हिये, निरखी राधा जाय ॥
शशी सरिस आनन निरखि, लोचन बने चकोर।
इक टक ही निरखत रहे, हरि राधा को ओर ॥
नील नीरजा सरिस शुभ, शोहौ नारि नवीन।
निरखत तब तन की छटा, छबि की हू छबि छीन ॥
गौरब बहू ता गाम को, यश भाजन सो तात
जन्म दियौ अस शक्ति कौं, धनि २ ऐसी मात ॥
दो०— यह लिलहारिनि ललित बहु, लीला गोदति अंग।
बाला विद्ध विशारिदा, लाई हों सखि संग ॥
कहन लगी इमि राधिका, सुनि लिलहारिनि बात।
गोदि कृपा करि ललित तू, लीला मेरे गात ॥

श्रवनन में लिखि सांमरौ, मस्तक मदन गुपाल।
कलित कपोलन कृष्णजी, लिखि नैंनन नंदलाल ॥
सुघड़ नासिका श्याम शुभ, जुग पुट करुणाँ कंद।
चारु चिवुक चित चोर लिखि, गल में गोकुलचंद ॥
छाती छलिया छैल शुभ, उरजन उत्तम ग्वाल।
उदर उचित यश श्याम कौ, लिखि नाभी भूपाल ॥
कलित कटि सुकान्हा लिखौ, उभय उरुन बृजराज।
घुटनन में घनश्याम लिखि प्रिय लिलहारिनि आज ॥
अंसन अहिता कंश कौ, कुहनिन नन्दकुमार।
उँगरिन राधेश्याम लिखि, ख्याति होय संसार ॥
लीला लिखि लिलहारिनी, लखी राधिका ओर।
एक २ को हेर हीं, लोचन चारु चकोर ॥
देख दशा लिलहारि की, राधा करति विचार।
बानिक सो वर वाल नें, जान्यौ नन्दकुमार ॥
दो०— बिहँसि कहँति बृषभान की, कर कमलन कौं जोर।
हौं अब अलि पावन भई, निरखत नंदकिशोर ॥
कलित कली सी कामिनी, छबि छाई तन तोर।
लखि ललचे चक्षु श्यामके, तुरत तुम्हारी ओर ॥
राधा अरु घनश्याम कौ, मिलन रह्यौ कछु काल।
बरषाने सौं शीघ्र ही, गमन करयौ नंदलाल ॥
उचित याम ही आगये, मधुवन में घनश्याम।
दामाँ दामोदर निरखि, पुलकि करी परनाम ॥

अध्याय ६

मोहन का मथुरा गमन

दो०— दृग ललचे तिय नरन के, निरखन हित ता काल।
सुन्दर स्यंदन चढ़ि चले, मधुपुर कों नंदलाल ॥
सदन २ संदेश जब, गुंजित गोकुल गाम।
गमन उद्यत स्यंदन चढ़ि, मधुपुर कों घनश्याम ॥

पद— बिबिधि बिधि बिलखि उठीं तब बाल ।
गोकुल सौं गमने जब मधुपुर, स्यंदन चढ़ि नंदलाल ।
नैंनन नीर बहावत सबही, बिलखि गोप अरु ग्वाल ।।
प्रेम पूरि पुनि पुलकि पुकारत, श्याम २ सब बाल ।
रुदन करति करुणाँ ह्वै तहँ तब, लखि अस 'लाल' बिहाल ।।

दो०— सुनत सँदेशौ सखिन सौं, गमन करत बृजराज ।
राधा के चित चैंन नहि, तुरत तजे गृह काज ।।
अति चंचल गति सौं चली, बिपुल बिकल बृजबाल ।
रथ रोक्यौ अरु कहँति अस, बिनय सुनौं नंदलाल ।।
किस सुकाज हित श्याम तुम, मधुपुर करौ पयान ।
भाषौ मन के भाव सब, मेरे जीवन प्रान ।।
मम को मथुरा लै चलौ, निज सङ्ग नंदकिशोर ।
पल २ बीतत युग सरिस, बिपुल विकल मन मोर ।।
बिहँसि बखानी श्याम अस, सत्य बतावत तोब ।
परसौं प्रेयसि आइ कैं तब मम संगम होब ।।

दो०— चंचल गति अक्रूर जब, स्यंदन दियौ बढ़ाय ।
गोप ग्वालिनी ग्वाल सब, रुदन करत अकुलाय ।।
बिरहानल सों दहत सब, गोकुल लौटे मोंन ।
ग्वालिनि ग्वाल अधीर बहु, धीर बँधावैं कोंन ।।
बिकल बिलोकति राधिका, नैंनन नीर बहाय ।
तनिक न ताके चैंन चित, उड़ि २ गोकुल खाय ।।
सीचौं सलिल सुआश के, लहर २ लहराय ।
नीच निरासा अनल सौं, मन नीरज कुम्हिलाय ।।
निरखे मग के शैल बन, बापी कूप तड़ाग ।
जबही सुन्दर श्याम के, उर उपज्यौ अनुराग ।।
हे आगर अक्रूर हम, आगत कियते कोष ।
नर नारिन कौ बाट मैं, सुनत न सुन्दर घोष ।।
बातन बीती बाट सब, भाषत अस अक्रूर ।

मथुरा के बहु निकट हम, श्याम सुहावन सूर ॥
कलित कगूँरा कोट के, दमिकि रहे चहुं ओर।
मन मोहन मथुरा पुरी, निरखौ नंदकिशोर ॥
बाट सकल सित सिलन की, बिटप लसित तिन तीर।
बिकसे शुचि शुभ सुवन तिन, भृमरन की बहु भीर ॥

दो०— नरनारी हरषे हिये, निरखत नदकिशोर ।
मथुरा में मगल भये, सदन २ चहुं ओर ॥
कुबिजा जाकौ नाम इक, बंकिम कटि की बाल।
हेरत हरषी श्याम के, गल मेली शुभ माल ॥

छ०— बिनय करति बहुबार कामिनी, नेह नीर नैंनन बरषैं ।
पग पूजति पुनि २ प्रियतम के, हेरि २ कें हिय हरषैं ॥
भाषति भाषौ भाष सुधासम, बतरस हित मम मन तरसैं।
सींचौ सुखद सुनेह नीर निज, सूखी बल्लरि पुनि सरसैं ॥

अध्याय १०

श्री राधाजी की विरह विथा

दो० — हे हेली परसों गई, नहिं आये घनश्याम ।
मम मन केकी दिवस निशि, करत फिरत कुहराम ॥
नभ नहिं रवि की लालिमा, तम छायौ चहुं ओर ।
अवधि गई आये नहीं, अबहू नंदकिशोर ॥
हे हेली तू तुरत ही, यहि निशि रवि अस फंद ।
जासु यतन सौं सुन्दरी, मिलैं मोय बृजचंद ।
चंचल लोचन थिर रहे, हेरत हरि की राह ।
नँद नदन निरखे नहीं, मिटी न मन की चाह ॥
सोचन सौं सूखी सकल, बिसराई मैं श्याम ।
अहे अली अपराध बिन, मान करत सुखधाम ॥
निशा दिवस निद्रा नहीं, नैंन बने पाषान ।
बीतति युग सम यामिनी, उड़गण गनत बिहान ॥

भावत भोजन नीर नहिं, अम्बर अंग सुहाय ।
आभूषण अनमोल बहु, मो मन रहे जराय ॥
लै चलिरी सुन्दर सखी, अस सागर के तीर ।
जाकी कल लहरिन लखत, सीतल होय शरीर ॥
जासु तटहि सुनिरी सखी, मनहिं मिलहि विश्राम ।
अस सागर बसिबौ भलौ, सो बहु सुन्दर धाम ॥
अस अरण्ड लै चलि सखी, शीतल तहाँ समीर ।
हरित २ तरु बहु जहाँ, अमो सरिस शुभ नीर ॥
दो०— अस बन मम मन तन सुखी, दूसर जन नहिं होय ।
नंदनंदन निबसत तहाँ. लै चलिरी अलि मोय ॥
इतके बन कूकन लगे, बारिद बिन बहु मोर ।
जानी बेनु बजाबहीं, नागर नंदकिशोर ॥
अंधकार अधिकांश सखि, अर्धनिशा यहि काल ।
घुमड़ि २ घनघोर बहु, बरषि रहे बन बाल ॥
नहिं आये मोहन सखी, नभ छाये घनश्याम ।
सारग २ शब्द सुनि; हरषि करत कुहराम ॥
सलिल लैंन हित हों गई, कालिंदी के तीर ।
पंथहि पंथी इक कही, मोसों कथा गंभीर ॥
तव अनुमान मिथ्या अलि, नहिं आबैं बृजराज ।
कंसहि कान्हा बधि बने, मधुपुर के अधिराज ॥
एक सेविका कंस की, बंकिम कटि की बाल ।
सो मोहन के मन बसी, सब तिय तजीं गुपाल ॥
बन उपबन अरु बाटिकन, गाम गये नहिं चैंन ।
बिरह बिकल तड़पत फिरत, मम मदमाते नैंन ॥
सर सरितन के तट नहीं, एक छिनक सुख होय ।
किस सुधाम में सुख मिलै, मानस सूरख तोय ॥
पिय परसों की कह गये, नहिं आये सुखधाम ।
रसना रटना करि रही, नंद नंदन को नाम ॥

छं०— बहु बाट बिलोकत प्रियतम की, बीती बिभावरी आली ।
छबि छीजी उड़गण शशि की सब, अम्बर छाई लखि लाली ॥
रवि की रौंन रश्मियाँ प्रकटीं, कल २ कूँजीं चटकाली ।
'लाल' लगी अब बिपुल लालसा, नहीं आये तन मन माली ॥

छं०— लगन लगी प्रियतम दरशन की, आली आजु अमित मन में ।
दिन रैन पिया बिन चैन नहीं, पीर उठति पल २ छन में ॥
मन मिलत नहीं सुख सीतलता, ऐसी तीव्र तपन तन में ।
'लाल' लखति तिय श्याम सुघड़ कौं, बंशी बट अरु मधुबन में ॥

छं०— यह अनुरागी मानस मेरो, आली सुन्दर श्याम हर्यौ ।
जिनकी जब सौं मूरति जोही, तब तेही सत प्रेम पर्यौ ॥
नवल नेह नें नित २ ही मन, भूरि भूरि सदभाव भर्यौ ।
'लाल' लखत कहुँ बच्यौ न कोऊ, जाकी ही जग ज्योति जर्यौ ॥

छं०— श्याम २ हर याम रटति हौं, मम मन में नव ज्योति जरी है ।
प्रिय पेखन हित तड़पति नितही, चैंन नहीं कहुं एक घरी है ॥
सोवत सपने हरि ही हेरति, हरि हीं सौं सब भूमि भरी है ।
अस अटकल नित करति सुबृंदा, हरि मूरति मन माँझ धरी है ॥

छं०— यहि रजनी रवि राजत ना हैं, जनि जानति को अंग जरावै ।
छिन पल परत चैंन नहिं चित कौं, पुनि २ पिय की सुरति सतावै ॥
बिपुल बिथा सौं बिष पान करौं, मेरे मन अस आली आवै ।
मरन नीक ही जा जीवन सौं, कत नहीं नारि हलाहल लावै ॥

छं०— मेरे मन की पीर न जानी, मधुपुर ही घनश्याम बस्यौ ।
परसौं की कहि पीय सिधार्यौ, जनि जानौं का फ़ंद फस्यौ ॥
श्याम संदेशौ सुन्यों न अबलौं, कौंन धाम नंदलाल लस्यौ ।
'लाल' बिपुल बृंदा बिलखानी, यहि कौ तन बहु कान्ह कस्यौ ॥

छं०— बाट बिलोकत सब निशि बीती, अब तम की नाशी अधिकाई ।
का कारण अबलौं नहिं आयौ, वह रुचिर रूप की रसिकाई ॥
उठि २ के यह पुनि २ पेखति, पामर प्रेम पगे पछिताई ।
'लाल' लखन हरि त्यागी लालसा, कहरि २ के राधा धाई ॥

छं॰— चैंन नहीं चित चंचल जब सों, मधुपुर सुन्दर श्याम सिधारे।
सुरति सतावति नन्द नन्दन की, अखियन असुअन चलत पनारे॥
प्रीति नहीं दुर रीति करी बहु, बृज वल्लभ के तन मन कारे।
लौटि 'लाल' आये नहि अबलौं, निशिदिन नैंन निहारत हारे॥

छं॰ - बारिद बिज्जु नहीं यहि अम्बर, इन के किनकत कूक मचाई।
करत कुलाहल बहु कानन में, सो सुन्दर ध्वनि धामन धाई॥
ध्वनि सुनि सुख की बरषा बरसी, मम मन में नव ज्योति जगाई।
आली अब ही जानि गई जिय, बृज बल्लभ बन बेनु बजाई॥

छं॰— सुनों संदेशो सखी सुनावहुं, सो सुख सौं दुख दून सन्यों है।
राज द्वार रण राजि उठ्यो बहु, कंस क्रूर कलि कान्ह हन्यौं है॥
स्वर्ण सिंहासन श्याम बिराजत, जा ऊपर इक छत्र तन्यों है।
कुबिजा कृष्ण कलोल करत मिलि, अलि अब यह नब संग वन्यौं है॥

दो॰— कंज कुसुम सालन लगे, कुंजैं काल कराल।
सर सरिता शोहत नहीं, सोचन सूखी बाल॥
बरषानों बधशाल सम, केकी बधिक बसाय।
जिनकी बोली शर बनति, बिरहनि बीधति धाय॥
सखि सारंग सोचत नहीं, गूंजत गगन गंभीर।
सुनि सकांइ सब बिरहिनी, बढ़ति बिपुल तन पीर॥
कारज करौ सुकीर्ति हित, मम संदेश सुनाय।
हे घनश्याम तू तुरतहि, जा घनश्याम पठाय॥
मम मोहन सों इमि कहौ, राधा रही बुलाय।
तुवबिन बिचरति विपिन मझ, भूषण बसन बिहाय॥
मन मोहन तुम कत गये, वंशीबट बिसराय।
सब बाला बिलखति फिरें, नैंनन नीर बहाय॥
मधुपुर बरषत अब अमी, मधुवन बिरह अंगार।
जा ज्वाला सौं जरि चली, कहा करौं उपचार॥
मधुपुर बरषत अलि अमी, बिष बरषत नंदगाम।
एक अमर इक मरि चल्यो, हरि कैसे सुखधाम॥

सारग सारश सारिका, चातक कोकिल कीर।
बिरहनि के जे अरि अली, सलिल सुगन्धि समीर ॥

छं०— बिकल बनाई बिरह बिथा हौं, आली आजु अकाल मरी।
बूडति बिलखति बिबिध भाँति सों, शोक सिन्धु मझधार परी।
हरि के हिय हौं नेंक न निवसी, नित नव बहु सत प्रीति करी।
बृज वल्लभ बिन बाल कहंति यह, जीवन नीक न एक घरी ॥

छं०— यहि शिशिर ऋतु में सुनि सजनी, मम दहँति दिवा निशि छाती।
बहुत बाट हेरति हौं नितही, नहिं पठई प्रियतम पाती ॥
बिरह बिथा सौं चित चैंन नहीं, रहि २ के सुरति सताती।
लोचन 'लाल' लखन हित ललचत, अति आशा अनल जराती ॥

छं०— तड़पति पुनि २ बिरह बिथा सौं, यह हौंही बिष बल्लरि बोई।
'लाल' बाल के बरषत नैंना, असुअन सौं सब सारी धोई ॥
प्रीय प्रवासी बृज बल्लभ की, सुधि करि २ बहु राधा रोई।
करिकें प्रीति रीति दुखदाई, कबहुं नहीं सखि सुख सौं सोई ॥

छं०— कहा कहौं हौं आपन आली, अवगुण आये सब गुण गोंने।
भटकि रही मन भाव भरे बहु, यहि मधुबन के कोंने कोंने ॥
अति लालायित लोचन ललचत चैंन नहीं पल लागत रोंने।
बीती अवधि अबहु नहिं आये, गोकुल में शुभ श्याम सलोंने ॥

दो०— पी २ पपिहा जनि कहे, पीय पराये देश।
सुरति सतावति पीय की, सुनि मन बढ़त कलेश ॥
पपिहा पुनि परसों गई, नहिं आये सुखकंद।
बिरह बदरिया झुकि रही, किमि निरखों निजचंद ॥

छं०— चातक कल २ कूंजि कहत तू, प्रेम पूरि पीया पीया।
ब्योम बिलोकत बिपुल बिकल सम, कुहकि २ कुहराम किया ॥
दिवस निशा तव चित चैंन नहीं, पीर पूरि तड़पत हीया।
सुखद सुधा सम स्वाँति बिन्दु कौ, निरमल नीर नहीं पीया ॥

छं०— ऋद्धि सिद्धि सी दासी जिनकी, प्रेम पगत सुख बंचित सोऊ।
जो करे करावैं प्रेम प्रथा, यहि के दुख सौं दाहत दोऊ ॥

चैन धरत नहिं पल २ छिन २, नित २ नींच सतावत मोऊ।
'लाल' लगाई लगन नीच यह, अब जनि प्रेम पगै जग कोऊ ॥

छं० — प्रिय प्रियतम की अद्भुत आभा, मम माँनस के मांझ समाई।
श्याम बरण के बृज बल्लभ की, मंजुल मूरति नैंनन छाई ॥
करि २ सुधि सेजन साजन की, निशि निंद्रा नहि आली आई।
तडपत तन मन बिन प्रियतम के, पामर प्रेम पगैं पछिताई ॥

छं० — पावन प्रिय तव पूजन हित हों, रबि तनया आई तट तोरे।
बहु बिनय करों कर जोरि जुगत, करौ सुसिद्ध मनोरथ मोरे ॥
सुन्दर सलिल बिलोकत ही तव, मम हिय हरषत लहँत हिलोरे।
लगन लगी अति सुघड़ श्याम सौं, बीते बहुत रहे दिन थोरे ॥

छं० — कथा कहौं तू सुनि शुभ सजनी, मोसौं भारी भूल भई।
निज तन मन की तपन बुझावन, कालिंदी के कूल गई ॥
पी २ पुनि २ करि पपिहा ने, असि सी हिय में हूलि दई।
तब ते तनिक चैन नहिं चित कौं, अँग अँकुरी इक पीर नई ॥

छं० — स्पंदन चढ़ि क्रूर अक्रूर सह, सुनि सखि मधुपुर गयौ समरिया।
कोमल कर वर बेनु बिराजति, काँधे धरिकें कलित कमरिया ॥
पूछति पुनि २ प्रेम पगी सी, गावति उन गुन गीत गमरिया।
नैंनन नीर झरत झरना सम, हरि सह का तव परीं भमरिया ॥

छं०— फेरा फिरी नहीं हों हरि सह, पैं प्रिय निज मन माँझ बसायौ।
मम मन तन की पीर न जानी, परदेशन हीं छैला छायौ ॥
जाकी जोहति बाट बहुत नित, कोऊ न दूत सँदेशौ लायौ।
कृन्दन करति अमित ही कामिनि, गत परसौं पैं पीय न आयौ ॥

छं० — बिरह बिथा के जीरन ज्वर सौं, दहँति दिवा निशि देहरी।
अम्बर असन अनिल पयपानी, नींक न लागत गेहरी ॥
मानस मांझ अमित ही अँकुरत, नित २ नव २ नेहरी।
बार २ बहु बरषत आली, अखियन असुअन मेहरी ॥

छं० — यहि कानन की कुंजन कोयलि, बिरहनि बोधी तेरे बैनन ;
बानी बिषिख सरिस उर लागी, तबते ताकौं नेंकउ चैंनन ॥

तन तड़पत दीरघ स्वाँस चलैं, बदन न बोलति खोलति नैनन ।
भाषा भाषि न 'लाल' कहै अब, क्रूरा करनी ऐसी ऐंनन ॥

दो०— कुंजन की सुनि कोकिला, जनि तू कूक सुनाय ।
बानी बिषिख समान तव, मेरे प्रान नसाय ॥
जनि कूकै तूं कोकिला, कालिन्दी के कूल ।
सुरति सतावति श्याम की, उर उपजत सुनि शूल ॥
बहँति तरंगिनि बृथाँ, दारुण दुख की मूल ।
बिरथाँ बिकसे ये यहाँ, कलित कंज के फूल ॥
तटिनी तट आई अली, मो मन की बहु भूल ।
श्यास बिना सालन लगे, सुरभि सुहावन फूल ॥
पवन पानि प्राकृत पशू, बैरी बने बिहंग ।
दृश्य देखि यहि काल कौ, दहँत अली मम अंग ॥
सुनि री कलित तरंगिनीं, कहँति तोय समझाय ।
मधुपुर में बृजराज कौं, मम सन्देश सुनाय ॥
मोहन जब मंजन करैं, तटिनी तेरे तीर ।
तब ही तू उन सों कहहि, मम मन तन की पीर ॥
हे अहिता तू जनि बहे, शीतल मन्द समीर ।
तव पुनि २ स्पर्श सौं, मेरा जरत शरीर ॥

दो०— पी २ चातक कहँत करि, स्वांति बिन्दु की आस ।
सरिता तट नित बसत तव, बुझी न पंक्षी प्यास ॥
राधारु कृष्ण जनि कहे, मम मन लागत तीर ।
राधा बरण बिसारि कें, कुवरि कृष्ण कहि कीर ॥
राधा कृष्ण कुकीर कहि, जरयो जरावत अंग ।
मैं मधुबन भटकी फिरौं, कृष्ण कूबरी सग ॥
चंचल चित कों चाहना, चकित चितों चहुं ओर ।
यहि आशा श्वांसा चलैं, आबत हौं चित चोर ॥
दारुण दुख निशि दिन सहौं, इक पल परत न चैंन ।
मींचति मैं मानत नहीं, ये अपराधी नैंन ॥

पद— कीर कत राधेश्याम कहै ।
तव अस बानी सुनि बृन्दा के, नैनन नीर बहै ।
मैं इकली बन बिचरति कन्हा, कूबरि संग रहै ।।
बिकल बनावत बिरह बिथा मन, दारुण दाह दहै ।
अहे अनारी असत भाषि जनि, अपयश अमित लहै ।।

पद— कोउ जनि रँगो राग के रंग ।
यहि के ही रँगि क्रूर रंग में, जरि २ मरत पतंग ।
प्रेम करि पछितावत मधुप बहु, कंज कली के सग ।।
रँगि २ रंग कुरंग राग के, निधन करत निज अंग ।
जीव जन्तु सबकों यह पामर, करत अमित ही तंग ।

पद— सखी सुनि प्रेम पगै नहि कोय ।
यहि के पथ पग परत काहु कौं.सुख सपने नहिं होय ।
पगि पतंग प्रेम पाग में छिन, गयो प्रान निज खोय ।
मैं अब आपन मानस की सत, बात बताबति तोय ।
पिय पथ पेखत दिवस निकारौं, निशा निकारौं रोय ।

पद— मेरे मदमाते जुग नैंन ।
पुनि २ पिय की बाट निहारत, नैंक नहीं जिन चैंन ।
मींचति मिचत नहीं पल पापी, अति तड़पत दिन रैंन ।
बाढ़ति बहु गति इनकी सुनि २, चातक के कल बैंन ।
चन्चल चितबत चारु चकित से, स्थिर कबहुं रहै न ।

पद— कोऊ काऊ न पीर हरै ।
जीवै जीव कोउ जुग २ लों, अथवा आजु मरै ।
बूढै बारिधि धारहि अथवा, इक पल पार करै ।
बैंकुण्ठ बिराजै बिन श्रमके, किंवा नरक परै ।
आली अस निरमोही जग में, कैसे काज सरै ।

दो०— नव नलिनी निरखत फिरत जानति तू शुभ श्याम ।
अली सरिस शुभ रूप रबि, बिचरि रह्यो यहि ठाम ।।
सुनहु सकल सुन्दर कली, यहि मधुकर को बानि ।

तुरत तजत पीकें मधू, तनिक करत नहिं कानि ॥
जल बिन जीवै मीन नहिं, जिय बिन काया कोय ।
मोर मरन बिन श्याम के, सखी सयानी होय ॥

छं०— नित २ निरखत नव २ कलिका, सुनि सुन्दर से कीट अनारी ।
पी पराग जिन तजत तुरत ही, नींक नहीं यह नीति तिहारी ॥
ते तड़पति तुवरी स्मृति में, बार २ बिलखाँय बिचारी ।
नेकहुं नेह नहीं तव मानस, अस भाषी बृषभान कुमारी ॥

छं०— मधुप भाष सुनिकें बृन्दा के, जब बहु हरषि २ हाँस्यौ ।
स्वर्ण लता सी सुनि शुभ सुन्दरि, मेरौ नेह नहीं नाँस्यौ ॥
सब कलिकन कों समही समभौं, मधुकर भूरि २ भास्यौ ।
प्रेम पूरि बहु पुलकि २ कैं, निज पावन प्रेम प्रकाश्यौ ॥

छं० — सुनि श्याम बरण के कुटिल कीट, मलिन महा यह मानस तेरौ ।
तनिक काल की प्रीति रावरी, इक तजि पुनि नव नलिनी हेरौ ॥
बेलि २ अरु बिटप अनेकन, बारी २ करौ बसेरौ ।
'लाल' कहै करि क्रोध कामिनि, अस ही भाव भरयौ पिय मेरौ ॥

छं० — गुंजन अस जस मुरली बाजति, तव बानिक मम मानस भायौ ।
बैसी बानि बिलोकत बांकौ, बैसौ ही तन रंग सुहायौ ॥
इक कलिका तजि इक सौं लिपटन, सबसों ही छिन नेह नसायौ ।
जिय जान गई तू मधुप नहीं, रचि लघु रूप बिहारी आयौ ॥

छं०— जानि जा राग कुरंग रगै तू. मानि २ मम मन अभिमानी ।
मदमातौ सौ व्याकुल विचरत, आठौ याम यहि हठ ठानी ॥
यहि पामर प्रेम कुपाग पगैं, कोऊ नहीं सुख पावत प्रानी ।
तजि रे तुरत कुराह राग की, बार बार बृन्दा बिलखानी ॥

छं० — राधा रुदन करति कानन में, जब कोयलि कहँति कूकि कारी ।
धाम धाय धरि ध्यान धनी कौ, अब धीरज धारौ सुकुमारी ॥
मलि २ मंजन करि मन मंदिर, नव भावन भाव भरौ भारी ।
'लाल' लगाय लगन सत बृन्दा, पुनि मधुवन में मिलै मुरारी ॥

छं०— अली अपावन काल बिराजत, कालिन्दी के कूलन में ।
कारौ २ कैसौ लखि री, बिचरत अम्बुज फूलन में ॥
नैंकउ निकट गई तू गोरी, भागि भकेगी भूलन में ।
जबसौं हरि गये यहाँ ते, यह बसत न तीर त्रिशूलन में ॥

छं०— कार्य करैं विपरीत श्याम बिन, कदम करीरन की कुंजैं ।
जिनके लखि सबही पातन सौं, प्रगटीं पावक की पुन्जैं ॥
जब ही हौं जिन अन्तर आवति, तब ही जे मम तन भुंजैं ।
हे हेली अब आस अनिल हू, पीर करति करिकैं लुन्जैं ॥

छं०— बृज बल्लभ बिन चैन नहीं चित, नैंनन बरषत नीर नवेली ।
नित बिलखति बहु बिरह बिथा सौं, बन बिचरौं हरयाम अकेली ॥
श्रमित नहीं तन नैंकउ मेरौ, साहस सकल प्रेम पथ पेली ।
'लाल' लगी अब बिपुल लालसा, हरि हित ही हों तड़पति हेली ॥

छं०— ऐसौ काज करौं सुनि आली, करै नहिं कोउ चाकरिया ।
लतन लिपिटि लहँगा सब फाट्यौ, उरझि २ फाटी फरिया ॥
लगि २ नत तरु की साखन सौं, फूटि गई दधि गागरिया ।
बन बन बिचरति विपुल विकल सी, मिलत नहीं नट नागरिया ॥

छं०— बिरह बिकल हौं बन २ बिचरौं, दिन २ दूनौं दुक्ख सह्यौ है ।
तन तड़पत पिय की स्मृति में, इन नैंनन बहु नीर बह्यौ है ॥
मेरे मानस मोहन कौ बहु रुचिर रूप रँग राजि रह्यौ है ।
निधन नीक अब सुनि री सजनी, बृन्दा इमि बहु बार कह्यौ है ॥

छं०— सब सदन भरे हैं सुनि सजनी, कोकिल की कल कल कूकन ।
पुनि २ ध्वनि अरु प्रति ध्वनि धावति, गूँजि रहे सब बन उपवन ॥
रुचिर राग सौं सुनि २ कें अब, मुग्ध भयौ बहु मेरौ मन ।
बार २ बहु बृन्दा बिहँसति, मनो मिल्यौ निरधन कों धन ॥

छं०— सुनि श्याम सुहावन सुखरासी, बहु रंगी राधिका तव रंग में ।
अति अगाध यह चढ्यौ चित्त में. याकी द्युति दमकति अतिअंग में ॥
हौं सदाँ मिली सत भावन सौं तुम कपट करत नित मम संग में ।
हे मेरे मन भावन प्रियतम, कत कंटक डारौ मग मग में ॥

छं०— श्याम सुघड़ सौं लगन लगाई, तजिकें संग गयौ सखि सोऊ।
शोक सिन्धु में बूढ़ि चली हौं, जा जग नहीं सहायक कोऊ॥
नित २ की इन नव व्याधिन सौं, जीवन के पन बीते दोऊ।
मेरो अति दुख देखि कामिनी, तनिक तरस नहिं आवत तोऊ॥

दो०— बिन धन ही कूकत फिरत, कत रे कपटी क्रूर।
घोष कौन कानन सुन्यौ, तासौं मुदित मयूर॥

दो०— अमी हलाहल द्वै मिले, तुमरी बानी बीच।
असमंजस राधा परी, मरे न जीये नीच॥
बाल बिकल अस श्याम बिन, सलिल शोष जस मीन।
पिक बैंनी पिय २ रटति, आनन की छवि छीन॥
आस सलिल सौं जी रही, भोजन भूली बाल।
भूषण बसन भावत नहिं, असह अशुभ तन हाल॥
बरषाने की बालिका, किमि जीवै बिन श्याम।
दारुण दुख निशिदिन सहौं, निकट नहीं आराम॥
हे मधुकर मधु लालची, कलिकन जनि गुंजार।
तुम अरु मोहन एक हौ, पढे कपट चटसार॥
मृदु गुंजन तू जनि करे, चंचरींक चित चोर।
सुनि कलिका उर प्रेम की, उठने लगीं हिलोर॥
मुयें श्याम बिन गोपिका, रुकि २ चालैं साँस।
यहि कारन अटकीं खरी, पिया मिलन की आश॥

छं०— बन २ बिचरत धेनु चरावत, सुनि २ रे सुठि ग्वाला गोरे।
विनय करौं बहुं बार प्रेमयुत, पद पंकज पूजौं पुनि तोरे॥
बिकल बनाई बिरहानल हौं, दुख के हिय में उठत हिलोरे।
नीति निपुण नव नीलाम्बर सम, तुम कहुं पेखे प्रियतम मोरे॥

पद— मेरे नैंन निहारत हारे।
गत परसौं पै पीय न आये, अब हूं नन्द दुलारे।
श्याम संदेशो कह्यो न अबलौं, काहूं सांझ सकारे॥
निशा दिवस बहु तड़पि २ कें, दुरदिन नीठि निकारे।

गये लिवाय सँग हरि हेली, अरि अक्रूर हमारे ।।

पद — राग रंग कत तू रंग्यौ पतंग ।
मम सत सीख मनि मदमाते, नींक नहीं यह रँग ।
अहे अयाने तव कल काया, अब ही ह्वै है भँग ।।
यहि कुरंग रंगि कोउ सुखी नहिं, छिन २ छाजत अँग ।
दीप सिखा सह दहि २ लिपटत, तजत नहीं दुर सँग ।।

"श्री राधा की पाती"

छं० — आजु अमित ही अनुपम अंबर, चितवत ही यह चित्त चुरावै ।
घुमिड़ि रहे घनश्याम सुहावन, चपला चम २ चमक दिखावै ।।
बार २ बहु बरषत पानी, नीरसहू कौं सरस बनावै ।
परसति पुनि२ अंग अनिल शुभ, तन मन की सब तपन बुझावै ।।
गरजि २ के मनु प्रेयसि कौं, निज नियरैं घनश्याम बुलावै ।
जानति जुगति कोउ अस आली, जासौं पिय के दरश करावै ।।

छं० — मोहन मिले नहीं कहुँ मोकौं, बहुत बिलोके बन उपवन ।
जानि गई हौं मर्म मनोहर, व्योंम बिराजत श्याम सुजन ।।
जब ही जे मम जीय लुभावत, श्याम २ से सुन्दर घन ।
प्रियतम नियरैं राधा की अब. पाती लैजा पीय पवन ।।

छं० — खण्ड भिन्न करि निज चूँदरि सौं, कुशा पात सौं जाँघ बिदारी ।
जा पट लिखति पिया कौं पाती, पुलकि २ वृषभानु कुमारी ।।
हे प्रिय प्रियतम तव स्मृति मे, तड़पि २ निशि नीठि निकारी ।
नित निरखति हौं राह रावरी, गोकुल आओ बेगि बिहारी ।।

छं० — पाती गहि बैठी वृन्दा जब, अनिल अमित ही बेग बही ।
ताके करसौं पाती उड़िकैं, तुरत गगन की गैल गही ।।
पाती मधुपुर गिरी गगन सौं, कुवरी के ही सदन सही ।
जाकौं कुविजा कर में गहिकैं, निज मन माँझ बिचारि रही ।।

छं० — पट पाती कर गहि कैं कुविजा, उलटि पुलटिबहु बार निहारी ।
अरुण अंक अंकित यहि ऊपर, मणि कण की द्युति दमकति न्यारी ।।
चीर खण्ड पित चोरि रह्यो शुभ, यह चातुरि कोंन चीर बारी ।

प्रियतम पट पेखौ यह कैसौ बार २ इमि बाल पुकारी ॥

छं०— मणि कण जटित खण्ड चुंदरी के, जग मग ज्योति करति जिनकी।
यहि पट पाती पढ़ि २ कान्हा, सुधि बुधि बिषरे तन मन की ॥
सुरति सताये बहु बृन्दा की, ग्वाल बाल अरु मधुबन की।
धरणी धार परति बहु इनकी, जुग अँखियन सों अँसुअन की ॥

छं०— पाती पढ़ि २ के प्रेयसि की, पुनि २ बिलखत बिपिन बिहारी।
प्रेम पीर तिनके तन बाढ़ी, नीरज नैंनन बरषन बारी ॥
छवि छीजी सुन्दर तन की सब, जिन बृंदा बहु बार पुकारी।
छड़िका सी कहँ छिपी छबीली, दर्शन दै मो प्रेम पिटारी ॥

छं०— पाती पढि के प्रेयसि की प्रभु, चित कौं चैंन न एक घरी है।
जिनकों जोहि कहँति अस कुवरी, तुमरी कासौं प्रीति खरी है ॥
जा जुवती को नाम बताओ, जाको जिय में ज्योति जरी है।
बिनय करति तिय विविध भाँति सौं, पिय पाँयन में पुलकि परी है।

छं०— करुणा करिकैं बहु कान्हा सौं, कहँति कामिनी कर गहि कैं।
पाती पठई किस प्रेयसि यहि. पढ़ि २ रोवत रहि २ कैं ॥
नेह नीर तुबरे मन निधि कौ, निकरत नैंनन बहि २ कैं।
तप्त तेल सम इन अँसुअन सौं, तव पग फलक परे दहि कैं ॥

छं०— पाती पठई राधा प्रेयसि, यहि पठि नैंनन नीर बह्यौ है।
अरुण २ लखि अंक रक्त के, मम मन निधि अति उमहि रह्यौ है ॥
प्रेम पुजारिनि राधा के प्रति, मेरौ नित २ नेह नयो है।
पुलकि २ प्रभु कुबिजा सौं निज, भूरि २ मन भाव कह्यौ है ॥

गोकुल गांव की दुर्दशा

दो०— बिरह बिकल बृजराज के, बौरी सी सब बाल।
बिचरति बन अरु बाटिकन, भ्रमित अशुभ तन हाल ॥
गोकुल की कुल गोपिका, बिकल गोप अरु ग्वाल।
दुख दावानल दहत सब, बर्णत बनत न 'लाल'।

सारग सारस सारिका, पपिहा पिक अरु कीर ।
बहँत बिरह बृजराज के, जिनके नैंनन नीर ॥
कहा कहौं बछरान की, तिनहु तज्यौ पय पान ।
धेनुन हूं नव दुःख परयौ, सोचन सूखे प्रान ॥
अश्व अमित तड़पत फिरत, क्रंदन करत सुस्वान ।
सकल बाल अरु बालिका, करत नहीं जलपान ॥
भोजन भकत न नारि नर, करत नहीं जलपान ।
कुल गोकुल यहि हाल सौं, निधन होय भगवान ॥

छं०— बृज बल्लभ की बिरह बिथा सौं, जनि गुंजन अब जन अलियाँ ।
बिरह बिपुल सन्ताप तपाईं, कुम्हिलानी कामिनि कलियों ॥
मनु शोक मनावत नर नारी, करत न कोऊ रँग रलियाँ ।
वर्णत 'लाल' बिहाल बिथा सब, सूनी सौं गोकुल गलियाँ ॥

दो०— बिरह बिथा तिन तन बढी, बिकल भईं बहु बाल ।
मधुपुर सौं तहँ आगये, उद्धवजी ता काल ॥
दो०— उद्धव कौ आगमन सुनि, गोकुल के नर नारि ॥
धाये तिनके निकट में, बहँत बिलोचन बारि ॥

पद०— ऊधौ कहौ श्याम संदेश ।
मधुपुर में मन मोहन अब तौ, सुख सौं बसत बृजेश ॥
सुनत संदेश श्याम सुन्दर कौ, मन की मिटै कलेश ॥
गोकुल गाम न आवत मधुपुर, कत वह दिपत दिनेश ॥
'लाल' लालसा लगी अमित कब, निरखें नवल नरेश ॥

दो०— गोकुल की लखि दुरदशा, उद्धव हू अकुलात ।
धीरज धरि भाषन लगे, सुनौ सकल मम बात ॥
कही कुशलता कृष्ण की, ऊधौ जी जा काल ।
जय बोले बृजराज की, गोप ग्वालिनी ग्वाल ॥
मधुपुर में मोहन बसत, सब बिधि सौं सानंद ।
शुभ संदेशौ उभय यह, मर्यौ कंस मति मंद ॥

अध्याय ११

बृज महिमा

दो०-- धनि २ बृज कीं रौंन रज, शीश धरों सौ बार।
तव सह बहु क्रीड़ा करीं, नित नित नंदकुमार ॥
बृज रज अस पावन बनी, परसि श्याम कौ अंग।
मलिन नीर जस शुचि बनत गंगा जल के संग ॥
बृज बनबारी बल्लरिन, नित नित नवल सुबास।
कण २ में द्युति श्याम की, पुनि २ करति प्रकाश ॥

छं०— सरिता सर बागन सौं सज्जित, बृज मंडल की मजु मही है।
जहँ जन नायक की मुरली की, प्रति ध्वनि अवहूँ गूंजि रही है ॥
नगर नगर अरु धाम २ में, रुचिर राग रस धार बही है।
जाहि जोहि सुनि मानस मूरख, बरषाने चलि चाखि दही है ॥

छं०-- नंद गाम गोकुल मथुरा की, सब वर बीथिन में जानों।
मधुवन बंशीवट बृंदावन, ज्योंहि ज्योंहि जमुना न्हानों ॥
गौरव गानकरैं नर नारी, ऐसी सुन्दर बरषानों ॥
जिन जोहन हित मानस मेरौ, आजु अमित ही अकुलानो ॥

दो०-- सुरति सतावति श्याम की, निरखत हो गिरिराज।
परतीति होय अस यहां, बसे बिहारी आज ॥
श्याम शिला गिरिराज की शोहै तरु तरु संग ॥
मनो मनोहर जगत में, हरित श्याम द्वै रंग।

दो०— गौरवयुत गिरिराज के, बन उपवन चहुं ओर।
जिनके तरुन सुभाष हों, सुख सारस अरु मोर ॥
कोकिल कलख करि रहीं, क्रीड़ा करत कपोत।
मिलत परस्पर प्रेम सों, हरयौ २ हिय होत।
छबि छाई बहु बल्लरिन, बारे बिटप रसाल।
पी २ मधू मदान्ध सब, चंचरीक यहि काल ॥
कदली कदम करीर के, बृज में बहु उद्यान।

फलत
जे जब सब फूलत ~~फिरत~~ फैलति सुरभि महान ।।
सर सरितन सुचि सलिल की लहरें लोल तरंग ।
जे जोहत ही अस लसित, धावत धवल भुजंग ।।
सर सरिता बन बन बाटिका, पथ २ पै पन शाल।
बृज की अस सुन्दर मही, लखि २ ललचत 'लाल' ।।

छं०— मधुवन बिटप रसालन के बहु, बौरे महँक दशहु दिशि छाई।
सुरभि भरीं बन सदनन में सों, जीव जन्तु के मानस भाई।
कदली केरि केतुकी फूलीं, कहुँ करीर कचनारि सुहाई।
विकसे शुभ पुह्प पलासन पै, जिन अति ही अरुणाई आई ।।
बिटप २ अरु बल्लरि बल्लरि, मन भावन भ्रमरावलि छाई।
यहि बन माँझ निशा अरु बासर, बृज बल्लभ मृदु बेनु बजाई ।।

दो०— सबल सुहावन शान्ति प्रिय, बृज के गोरे ग्वाल।
मुरली लकुटी करन में, मन भावन उर माल ।।
बिपिन बिपिन बिचरत फिरत, ग्वाल चरावत गाय।
दशहु दिशा नादित करत, मुरली मधुर बजाय ।।

छं०— मानव मन मोहक वर बृज में, गिरिराज श्याम रंग राजि रह्यो है।
यह ऊपर अरु चहुं ओरन सौं, तरु बेलिन सौं शुभ साजि रह्यो है।।
दर्शन हित धावत नर नारी, अस गुन गौरव जग गाजि रह्यो है।
जय जय जय ध्वनि पूरति अंबर, सुर पति सुनि २ वहु लाजि रह्यो है।

छं०— सूर सुता तट मधुपुर राजत, तरु हरित २ चहुँ ओरन सौं।
नरतत नित २ अरु कल कूकत, छवि छाई मोर चकोरन सौं ।।
सित २ से सब धाम सुहावत, बिबिध भाँति की कल कोरन सौं।
कल २ कूँज करति कालिन्दी, मानव मन हरति हिलोरन सौं ।।

छं०— बृन्दावन पुर पावन बृज के, तव गुन गावत नित नरनारी ।
हेरत ही तव मंजुल मदिर, उर मँझ उमंग उमहति भारी ।।
क्रूर कामना नासत पल में, अरु पतितन हूँ पावन कारी ।
मम मन मानत अस अबहूँ तव बीथिन विचरत नित गिरिधारी ।।

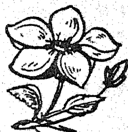
२६

छं०— गोकुल को गौरव बहु उन्नत, नित निवसे जहँ बाल विहारी।
घाय २ जिन धैंनु चराईं, कदम करीरन की कल भारी ॥
क्रीड़ा करत फिरे कानन में, नित वेनु बजाई सुखकारी।
'लाल' लख्यौ यह एक बार ही, प्रिय पावन पुर पापन हारी ॥

छं०— गिरि के निकट बस्यौ बरषानों, बृन्दा कौ बढ़ गाम सुहावन।
यहि की बीथिन बिहरी बृंदा, जब ही यह पावन सों पावन ॥
अवलिन अयन अनेकन शोहत, सर कूपन के दृष्य लुभावन।
बृज बरषानों निरखि तुरत ही, मांनि २ मन नींच सिखावन ॥

छं०— नंद गाँम में नन्द महिर को, मंदिर सुन्दर शोहत हैं।
सो सुअचल की सिखिरि बिराजत, दर्शक को मन मोहत है ॥
मानस मुदित होय जाई को, जो कोऊ यहि जोहत है।
ललचि २ के 'लाल' दिवा निशि बृज के दृष्य बिलोकत है ॥

पद— बृज बहु पावन भाव भरैं।
यहि अंतर प्रविसत उर उमहत, अरु यहि मैल हरैं।
कुटिल कामना नासैं सब जब, हरि को दर्श करैं ॥
हेरत बृज के बीहड़ बारी, पापन पुंज जरैं।
नर निज रुचिर बंश कौं अबहू, कत नहीं तारि तरैं ॥



शुद्धि पत्र ।

पृष्ठ नं०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१२	सुखअर	सुखरु
,,	१५	ज	जन
,,	१६	गुनैं	गुंजैं
,,	१८	तिरगा	तिरंगा
२	५	नद नदन	नंद नंदन
,,	१८	अकित	अंकित
३	१७	कहत	कहँत
,,	२४	बल्लौलिनी	कल्लौलिनी
,,	,,	बहती	बहँति
६	१६	अर	ओर
,,	२३	शशि	शशी
७	६	नद	नंद
,,	११	सुरत	सुरति
,,	,,	मजुल	मंजुल
,,	१३	गवती	गावति
८	३	नदन	नंदन
,,	४	ग्यौ	गयौ
,,	७	रुचर	रुचिर
,,	१२	ब्यधि	ब्याधि
,,	१५	०	भूमि २ कैं यहि भव वारिधि में, अबलौं अनुपम याम लुटाया ।।
,,	२०	जोह	जोहै
,,	२१	प्रम	प्रेम
,,	२२	पुलक	पुलकि

	पृष्ठ नं०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
	८	२६	विनह	विनय
	,,	२९	तत्वन	तत्वून
	९	४	सा	सो
	,,	,,	हैं	ह्वैं
	,,	५	तन अरु	तनरु
	,,	६	मत्री	मंत्री
	,,	८	मजु	मंजु
	,,	९	जाव	जीव
छं०	,,	११	कसा	कैसो
	,,	१७	विपरत	विपरीत
	,,	२४	निकट	निकसी
	१०	१	मम	मन
छं०	,,	१४	मव	सब
	,,	,,	संसर	संसार
	१३	५	रग	रंग
	,,	२७	गिरधारी	गिरिधारी
	१४	११	मन वावन	×
	,,	१९	कालिंदी	कालिंदि
	१६	१४	वनमी	बजनी
	,,	१५	किकिन	किंकिन
	,,	१६	सुठि	तिय
	१७	२	स्वण	स्वर्ण
	१८	२	वजा	वजावहीं
	,,	३	चदकी	चंदकी
	,,	४	विकनी	विकसीं
	,,	५	बृज नंदन	बृजचंद
	,,	८	परि	पीर

पृष्ठ नं०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१८	१२	मीर	भीर
,,	१४	भ.रि	भूरि
,,	२१	जह	जहँ
,,	२८	वह	वहु
१९	१२	लाल	लोल
,,	१३	शी	शशी
,,	२२	पायन	पाँयन
,,	२८	लाचन लाल अलाल	लोचन लोल अलोल
२०	१	हल	हाल
,,	३	कल कुज	कल कुंज
,,	६	तय	तिय
,,	७	जाहत	जोहत
,,	,,	पतग	पतंग
,,	८	का	की
,,	१०	श्यम	श्याम
,,	१४	क्षुधा	क्षुदा
,,	,,	अग	अंग
,,	१५	कुरग	कुरंग
,,	१६	निभय	निर्भय
,,	१७	धारण	धारक
,,	२०	यह	यहँ
,,	२१	नारा नाति	नारी नीति
२१	२	मई	भई
,,	६	नाहि.I	नाटति
,,	,,	नह	नहि
,,	७	वांह	वाट

पृष्ठ नं०	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२१	९	पायन	पाँयन
,,	१३	कन	कर
,,	१८	चरबौ	चखौ
२२	५	कर	करैं
,,	६	फरैं गया	फिरैं गमा
,,	७	मार	मोर
,,	८	किशार	किशोर
,,	१६	मार	मोर
,,	,,	नदलाल	नँदलाल
,,	२४	धरिक	धरिकें
,,	,,	ढार	ढोर
,,	२६	भानिना	भानिनी
२३	३	दश	दर्श
,,	१०	रग	रंग
,,	१६	साय	सोय
,,	१९	नांठि	नींठि
,,	२०	मजन	मंजन
,,	२३	अजन	अंजन
२४	२	दश	दर्श
,,	३	कन	मन
,,	६	लर	लरैं
,,	१२	वावर	तावर
,,	१५	दाध	दधि
,,	२४	पूज	पूजन
,,	२७	रगौ	रँगी
,,	,,	रग	रँग